व्याकरण वृक्ष 5

शिक्षक-दर्शिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

भाषा और व्याकरण पाठ योजना: 1

आज की अवधारणा

छात्रों को भाषा की उपयोगिता व उसके रूपों का ज्ञान कराना। भाषा व बोली का अंतर स्पष्ट करते हुए लिपि तथा व्याकरण से भी परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र सामान्य रूप से अपने दैनिक जीवन में भाषा के दोनों रूपों का प्रयोग करते आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे:

- भाषा का अर्थ समझने तथा उसे सोच-विचार कर बोलने में,
- भाषा तथा बोली के मध्य अंतर करने में,
- लिपि तथा व्याकरण को भली-भाँति समझने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों को दैनिक जीवन में भाषा की उपयोगिता से अवगत कराना।
- सांकेतिक भाषा की महत्ता बताना।
- व्याकरण तथा लिपि के महत्व से परिचित कराना।

लक्ष्य कौशल

भाषा के प्रति छात्रों के भीतर कौतूहल उत्पन्न करके उन्हें शुद्‌ध वाचन एवं लेखन हेतु प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

छात्रों को मूक-बधिरों की सांकेतिक बातचीत संबंधी वीडियो क्लिप दिखाएँ तथा उनसे पूछें कि उन्हें उनकी बातचीत से क्या समझ आया कि वे आपस में क्या बात कर रहे होंगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध भाषा एवं व्याकरण संबंधी पुस्तकें।
- यूट्‌यूब पर भाषा के शुद्‌ध वाचन एवं लेखन से संबंधित वीडियो क्लिप्स।
- विद्‌यालय में भाषा की प्रारंभिक जानकारी देने वाले चित्रात्मक चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि उन्हें वह जानकारी दी जा रही है जो उनके पास पहले से है, पर वे जानते नहीं हैं। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को भाषा के संबंध में बताना। उनमें भाषा संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है—बोलना या प्रकट करना। • भावों और विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम को ही 'भाषा' कहते हैं। • भाषा के दो रूपों में पहला रूप मौखिक भाषा है जिसमें बोलकर विचार प्रकट किए जाते हैं। यही भाषा का प्रारंभिक रूप है। • छात्रों को बताएँ कि भाषा का दूसरा रूप लिखित रूप है। इसमें लिखकर अपने विचार प्रकट किए जाते हैं। • उन्हें बताएँ कि कुछ लोग संकेतों में भी बात करते हैं, उनकी इस भाषा को सांकेतिक भाषा कहा जाता है। • छात्रों को बताएँ कि भारत में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। उन्हें संसार भर में बोली जाने वाली किन्हीं पाँच भाषाओं के नाम बताने को कहें। • तत्पश्चात् अध्यापक भाषा और बोली में अंतर स्पष्ट करें। • भारतीय भाषाओं और बोलियों को जानने के प्रति उन्हें जिज्ञासु बनाएँ। • अंत में लिपि व व्याकरण का ज्ञान कराते हुए उन्हें शुद्ध वाचन एवं लेखन हेतु प्रेरित करें। • उन्हें बताएँ कि प्रत्येक भाषा के अपने कुछ नियम होते हैं जिन पर उस भाषा की संरचना टिकी होती है, यह व्याकरण से ही ज्ञात होता हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. भाषा का अर्थ क्या होता है?

....

ख. भाषा और बोली में क्या संबंध है?

....

....

....

ग. लिपि किसे कहते हैं?

....

....

घ. व्याकरण कैसी विधा है?

....

....

ङ. सांकेतिक भाषा का प्रयोग किन लोगों द्वारा किया जाता है?

....

....

2. ऐसी कोई चार भाषाएँ लिखिए, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं।

क. ....

ख. ....

ग. ....

घ. ....

3. निम्नलिखित भाषाओं को उनके राज्यों से मिलाइए।

भाषाएँ	प्रदेश
क. तमिल	पश्चिम बंगाल
ख. पंजाबी	जम्मू-कश्मीर
ग. बंगाली	तमिलनाडु
घ. गुजराती	पंजाब
ङ. मलयालम	गुजरात
च. कश्मीरी	केरल

4. उचित विकल्प पर घेरा (◯) लगाओ-

क) फारसी में लिखी जाने वाली भाषा — कश्मीरी/मराठी

ख) देवनागरी में लिखी जाने वाली भाषा — संस्कृत/पंजाबी

ग) रोमन में लिखी जाने वाली भाषा — अंग्रेजी/हिंदी

घ) गुरुमुखी में लिखी जाने वाली भाषा — कश्मीरी/पंजाबी

वर्ण-विचार

पाठ योजना: 2

आज की अवधारणा

छात्रों को वर्ण तथा वर्णमाला के बारे में बताना। वर्ण के दोनों भेदों को परिभाषा सहित स्पष्ट करना। स्वर व व्यंजन समझाना। स्वर के तीनों भेदों का परिचय कराना। संयुक्त व्यंजन व द्वित्व व्यंजन स्पष्ट करते हुए संयुक्ताक्षर भी समझाएँ। वर्ण-विच्छेद करना सिखाएँ तथा छात्रों को मात्रा प्रयोग भी बताएँ।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि हम बोलकर या लिखकर दूसरों को अपनी बात समझा सकते हैं तथा सुनकर या पढ़कर दूसरों की बात को समझ सकते हैं, यही भाषा है। उन्हें मौखिक व लिखित का अंतर, भाषा और बोली का अंतर पता है। वह लिपि तथा व्याकरण की परिभाषा से भी परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में वर्ण-विचार संबंधी विषयों को जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- वर्ण व वर्णमाला के बारे में सोचने और विचार करने में,
- स्वर व व्यंजन की अलग-अलग उपयोगिता को समझने में,
- संयुक्त व द्वित्व व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर के बारे में जानकारी देना।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- स्वर के तीनों भेदों को स्पष्ट रूप से समझाना।
- 'र' वर्ण के विभिन्न प्रयोगों से परिचित कराना।
- वर्ण-विच्छेद स्पष्ट करके उसे प्रयोग करने के लिए प्रेरित करना।
- मात्राओं को प्रयोग सिखाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में वर्ण-विचार विषय को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर एक वर्ग-पहेली बनाए। उसे बनाने के बाद छात्रों से विभिन्न स्वरों की मात्राओं से बने शब्द ढूँढने को कहें। छात्र उन्हें ढूँढकर अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखेंगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध वर्ण-विचार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर स्वर तथा व्यंजन और मात्रा प्रयोग संबंधी जानकारी देने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संयुक्ताक्षर, द्वित्व व्यंजन व संयुक्त व्यंजन की जानकारी देने वाला चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि हम जो कुछ भी बोलते हैं, उन ध्वनियों के लिखने के लिए कुछ चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये चिह्न ही वर्ण कहलाते हैं। जान लें कि प्रत्येक भाषा का अपना एक अर्थ होता है जो कुछ संकेत या चिह्नों के माध्यम से प्रकट होता है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को वर्ण-विचार के संबंध में बताना तथा उनके बारे में विस्तारपूर्वक जानने के लिए उत्सुकता पैदा करना।	• छात्रों, को बताएँ कि वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहा जाता है। हिंदी भाषा के वर्णों को स्वर तथा व्यंजन में विभाजित किया गया है। • स्वर व व्यंजन की परिभाषा समझाकर उन्हें अयोगवाह के बारे में बताएँ कि ये न तो स्वर माने जाते हैं और न ही व्यंजन। • 'क' से 'म' तक के वर्णों को कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग में रखा गया है, जिन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। वहीं 'ड़' और 'ढ़' दो ऐसे वर्ण हैं, जिनसे किसी शब्द की शुरूआत नहीं होती। • उन्हें बताएँ कि य्, र, ल्, व् वर्णों को अंतःस्थ व्यंजन, श्, ष, स, ह वर्ण को ऊष्म व्यंजन तथा क्ष, त्र, ज्ञ, श्र् को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। • याद रखें कि हिंदी में बोलने की दृष्टि से 'ऋ' का भी मात्रा चिह्न होता है। • फिर बताएँ कि स्वर के तीन भेद होते हैं-ह्रस्व, दीर्घ और लुप्त स्वर। इन्हें श्यामपट्ट पर उदाहरण सहित स्पष्ट करके समझाएँ।

	• छात्रों को समझाएँ कि अनुस्वार (ं) का उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है। • उन्हें आगत ध्वनि के बारे में बताने के बाद मात्रा के बारे मे समझाएँ। 'अ' स्वर को छोड़कर सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं क्योंकि यह प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में होता है। • उन्हें प्रत्येक स्वर की मात्रा का प्रयोग करते हुए शब्द बनाकर दिखाएँ तथा बताएँ कि व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है। • छात्रों को द्वित्व और संयुक्त व्यंजन श्यामपट्ट पर समझाएँ और स्वयं शब्द बनाकर दिखाने को कहें। • इसके अलावा उन्हें 'र' वर्ण के विभिन्न प्रयोगों से भी अवगत कराएँ तथा वर्ण-विच्छेद करना समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. प्लुत स्वर किन्हें कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

....

ख. द्वित्व व्यंजन किन्हें कहते हैं?

....

ग. अनुस्वार और अनुनासिक स्वरों में अंतर बताइए।

....

घ. अयोगवाह से आप क्या समझते हैं? किन स्वरों को अयोगवाह कहा जाता है?

....

ङ. वर्णमाला किसे कहते हैं?

....

2. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए-

क. समझन – ....

ख. पाठशाला – ....

ग. भगवती – ....

घ. कछुआ – ....

ङ. बालिका – ....

च. युवती – ....

3. निम्नलिखित शब्दों में किन स्वरों की मात्रा लगी है? बताइए-

शब्द	सिर	अजमेर	प्रकार	अंग	दौर	पुष्प	अपमान
स्वर							

4. निम्नलिखित शब्दों में से संयुक्त व्यंजन और द्‌वित्व व्यंजन वाले शब्दों को अलग-अलग करके लिखिए-

त्योहार	पत्ता	बच्चा	क्योंकि	लट्टू	त्याग
चक्कर	गुब्बारा	श्रमिक	क्षमा	पत्रिका	सच्चा

संयुक्त व्यंजन	**द्‌वित्व व्यंजन**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

5. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

ह्रस्व संकेत संस्कृत अंत:स्थ आगत विच्छेद स्वरों

क. प्रत्येक ध्वनि को लिखने के लिए .... बने हैं।

ख. य्, र्, ल्, व् वर्ण .... वर्ण कहलाते हैं।

ग. .... स्वरों को बोलने में दीर्घ स्वरों की अपेक्षा कम समय लगता है।

घ. विसर्ग का प्रयोग .... शब्दों के साथ किया जाता है।

ङ. .... का प्रयोग अंग्रेजी से हिंदी में आए शब्दों में किया जाता है।

च. .... के लिए निर्धारित चिह्न मात्राएँ कहलाती हैं।

छ. .... का अर्थ 'अलग करना' होता है।

शब्द-विचार　　　　पाठ योजनाः 3

आज की अवधारणा

छात्रों को शब्द-विचार के बारे में बताना। शब्द-निर्माण करना समझाना। शब्दों के वर्गीकरण को अर्थ, उत्पत्ति या स्त्रोत, प्रयोग व बनावट के आधार पर समझाना। इन आधारों के भेदों से परिचित कराना। सार्थक और निरर्थक शब्दों को बताना। तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी, संकर शब्द समझाना। रूढ़, यौगिक, योगरूढ़ तथा विकारी व अविकारी शब्द में अंतर स्पष्ट कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र वर्ण-विचार विषय से पूरी तरह परिचित हैं। वे वर्णों के भेद स्वर व व्यंजन को जानते हैं। उन्हें पता है कि 'अ' के अलावा सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं। व्यंजनों के साथ लगने पर स्वर मात्रा का रूप ले लेते हैं। उन्हें संयुक्त, द्‌वित्व व्यंजन तथा संयुक्ताक्षर का भी ज्ञान है और वे वर्ण-विच्छेद से भी परिचित हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में शब्द-निर्माण संबंधी रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- शब्द निर्माण के बारे में सोचने और विचार करने में,
- सार्थक और निरर्थक शब्दों को समझने में,
- उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण जानने में,
- रूढ़, यौगिक व योगरूढ़ शब्दों के बीच अंतर करने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- तत्सम् व तद्‌भव शब्दों से परिचित कराना।
- विकारी व अविकारी शब्द की परिभाषा उदाहरण सहित समझाना।
- देशज, विदेशी और संकर शब्दों को समझाकर उनके बारे में पूछना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पना को उन्मुक्त करते हुए उन्हें रूढ़, यौगिक व योगरूढ़ शब्दों की पहचान करने के लिए प्रेरित करें।

गतिविधियाँ

अध्यापक श्यामपट्ट पर अधिक से अधिक शब्द लिखें फिर छात्रों को उनमें से तद्‌भव, तत्सम, देशज, विदेशी और संकर शब्द ढूँढकर अलग-अलग करके लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-विचार जानकारी संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर शब्द विचार संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में शब्दों के वर्गीकरण की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि वर्णों के मेल से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं। शब्दों का वर्गीकरण चार आधारों पर किया जाता है अर्थ के आधार पर, उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर, प्रयोग के आधार पर तथा बनावट के आधार पर।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को शब्द निर्माण के बारे में बताना तथा शब्द के भेदों को जानने के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, अर्थ के आधार पर दो प्रकार के शब्द होते हैं—सार्थक और निरर्थक शब्द। अर्थ बोधक शब्दों को सार्थक शब्द कहते हैं, जबकि जो शब्द अर्थ बोधक नहीं होते, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं। • श्यामपट्ट पर सार्थक और निरर्थक शब्दों के बीच अंतर स्पष्ट करके उन्हें सार्थक व निरर्थक शब्द लिखने को कहें। • फिर उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर शब्दों के भेद जानें और तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी और संकर शब्द में अंतर बताएँ। • संस्कृत भाषा के शब्द, जो हिंदी भाषा में ज्यों-के-त्यों अपनाए गए, तत्सम शब्द कहलाते हैं, वहीं कुछ रूप बदलकर हिंदी में अपनाए गए संस्कृत के शब्द, तद्भव शब्द कहलाते हैं। • उदाहरण सहित तद्भव-तत्सम शब्द स्पष्ट करने के बाद बताएँ कि स्थानीय बोलियों से हिंदी भाषा में लिए गए शब्द देशज तथा विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में ग्रहण किए गए शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं, वहीं दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के मेल से बने नए शब्द संकर शब्द होते हैं।

	• उदाहरण सहित तद्भव-तत्सम शब्द स्पष्ट करने के बाद बताएँ कि स्थानीय बोलियों से हिंदी भाषा में लिए गए शब्द देशज तथा विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में ग्रहण किए गए शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं, वहीं दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के मेल से बने नए शब्द संकर शब्द होते हैं। • अब बनावट के आधार पर शब्दों के भेद जानें। रूढ़, यौगिक व योगरूढ़ की परिभाषा उदाहरण सहित श्यामपट्ट पर लिखकर समझाएँ। उन्हें बताएँ कि रूढ़ शब्दों के सार्थक खंड़ किए जा सकते हैं। • फिर प्रयोग के आधार पर विकारी व अविकारी शब्दों के बारे में जानें कि विकारी शब्दों में लिंग, वचन और काल के कारण परिवर्तन आ जाता है जबकि अविकारी शब्दों में किसी भी स्थिति में कोई भी बदलाव नहीं आता है। • संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण विकारी शब्द हैं, क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. शब्द किसे कहते हैं?

....

ख. सार्थक तथा निरर्थक शब्दों में अंतर बताइए।

....

ग. तत्सम शब्द कौन-से होते हैं?

....

घ. बनावट के आधार पर शब्दों के भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

ङ. विकारी तथा अविकारी शब्द किन्हें कहते हैं?

....

....

2. तत्सम तथा तद्भव शब्दों को अलग करके लिखिए।

सर्प	सूरज	दही	फूल	दंत	घर	ओष्ठ
कर्ण	जीभ	ग्राम	पुष्प	हाथ	अश्रु	रात

तत्सम शब्द	**तद्भव शब्द**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

....

3. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

क. स्थानीय बोलियों से हिंदी भाषा में ग्रहण किए गए शब्दों को .... शब्द कहा जाता है। (विदेशी/देशज)

ख. 'सिनेमाघर' .... शब्द का उदाहरण है। (संकर/देशज)

ग. लिंग, वचन, कारक आदि के कारण जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन आता है, वे .... शब्द कहलाते हैं। (अविकारी/विकारी)

घ. .... शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता। (निरर्थक/सार्थक)

ङ. ...., वर्णों के सार्थक मेल से बनते हैं। (स्वर/शब्द)

4. 'विद्या+आलय' के योग से 'विद्यालय' शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को जोड़कर नवीन शब्द बनाइए–

क. प्रधान + मंत्री	....	ख. देश + भक्ति	....
ग. चिड़िया + घर	....	घ. हिम + आलय	....
ङ. लंबा + उदर	....	च. नील + कंठ	....

5. पाँच देशज तथा पाँच संकर शब्द लिखिए।

देशज – ....
....

संकर – ....
....

संज्ञा　　　　पाठ योजना: 4

आज की अवधारणा

छात्रों को संज्ञा एवं उसके भेदों तथा विभिन्न शब्दों से किस प्रकार भाववाचक संज्ञा शब्द बनाए जाएँ, इस बात से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्‌यार्थी जानते हैं कि संसार में सभी का कोई-न-कोई नाम है। यदि हम किसी का नाम नहीं जानते, तो उसके बारे में बात करने में असुविधा होती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- संज्ञा को परिभाषित करने में,
- संज्ञा के तीनों भेदों तथा अन्य भेदों को जानने में,
- विभिन्न शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाने में।

पाठ का उद्‌देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्‌देश्य है–

- छात्रों को जीवन में संज्ञा शब्दों की महत्ता से परिचित कराना।
- संज्ञा के भेदों की पहचान कर सकना।
- आस-पास के वातावरण से संज्ञा शब्दों की पहचान करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों को विभिन्न संज्ञा शब्दों की पहचान करने तथा विभिन्न संज्ञा शब्द बनाने हेतु प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

छात्रों को अनुच्छेद अथवा निबंध देते हुए उसमें से संज्ञा के भेदों के अनुरूप शब्द अलग करने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्‌यालय के पुस्तकालय में संज्ञा व उसके भेदों की जानकारी से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्‌यूब पर संज्ञा संबंधी जानकारी के वीडियो क्लिप्स।
- विभिन्न संज्ञा शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाने वाले शब्दों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'संज्ञा' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को संज्ञा तथा उसके भेदों एवं अन्य भेदों एवं अन्य भेदों की जानकारी प्रदान करना।	• छात्रों, इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु और भाव आदि के नाम होते हैं। ये नाम ही 'संज्ञा' कहलाते हैं। • उन्हें बताएँ कि संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक संज्ञा। • अध्यापक तीनों भेदों को एक-एक करके उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • तत्पश्चात् उन्हें बताएँ कि कुछ विद्वान संज्ञा के दो भेद और मानते हैं—द्रव्यवाचक तथा समूहवाचक संज्ञा। • शिक्षक इन दो भेदों को भी स्पष्ट करें तथा अधिक-से-अधिक उदाहरण देते हुए समझाएँ। • अ ब यह ज्ञात करने के लिए कि छात्रों को सभी भेद समझ आ चुके हैं, उन्हें श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर दें तथा उनसे पूछें कि इसमें संज्ञा का कौन-सा भेद है। • भेदों की जानकारी देने के पश्चात् पुस्तक की सहायता से उन्हें विभिन्न शब्दों से बने भाववाचक शब्दों को बनाना सिखाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. शब्दों का क्रम ठीक करके वाक्य बनाइए।

क. संज्ञा की परिभाषा देते हुए इसके प्रकारों की संख्या बताइए।

....

ख. संज्ञा के अन्य भेदों, द्रव्यवाचक संज्ञा तथा समूहवाचक संज्ञा को स्पष्ट कीजिए।

....

ग. ऐसी कोई चार भाववाचक संज्ञाएँ बताइए, जिन्हें आप छू नहीं सकते, केवल उन्हें अनुभव कर सकते हैं।

....

घ. हम दोनों भाई-बहन दिल्ली शहर में रहते हैं। इस वाक्य में 'भाई-बहन' और 'दिल्ली' संज्ञा के कौन-से भेद हैं?

....

2. निम्नलिखित विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

क. हरा -	....	ख. मोटा -	....
ग. कठिन -	....	घ. गहरा -	....
ङ. खट्टा -	....	च. मीठा -	....

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित कीजिए।

क. मीरा, कृष्ण की .... में रम गई। (भक्त)

ख. सुरेश ने अपनी .... को अच्छे से निभाया। (दोस्त)

ग. भारतीय के भीतर .... का भाव सदैव विद्यमान रहता है। (मनुष्य)

घ. उसकी बात सुनकर मुझे .... आ गई। (हँस)

ङ. आँवले में बहुत .... थी। (खट्टा)

4. दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए।

क. मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

ख. क्या तुम आगरा घूमने जा रही हो।

ग. हम सभी इस पार्क में रोज आते हैं।

घ. उसका नाम हार्दिक है।

ङ. मुझे यहाँ की हरियाली बहुत पसंद है।

संज्ञा के विकार पाठ योजना: 5

आज की अवधारणा

छात्रों को संज्ञा शब्दों में विकार उत्पन्न करने वाले विकारी तत्वों के बारे में बताना। लिंग, वचन तथा कारक की परिभाषा से अवगत कराना। उन सभी के भेदों से उदाहरण सहित परिचय कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति, स्थान, वस्तु और भावों के नाम होते हैं। ये नाम ही संज्ञा कहलाते है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में संज्ञा शब्दों में विकार उत्पन्न करने वाले तत्वों को जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- लिंग, वचन, कारक के बारे में सोचने और विचार करने में,
- लिंग के भेद व उसके महत्व को जानने में,
- एकवचन तथा बहुवचन का अंतर स्पष्ट करने में,
- कारक-चिह्नों की पहचान व उसके भेदों के नाम जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- लिंग परिवर्तन के नियमों से परिचित कराना।
- वचन के भेदों का नाम जानकर उनके वचन परिवर्तन संबंधी नियम बताना।
- कारक चिह्न क्रिया के साथ क्या प्रकट करते हैं? इस बात से अवगत कराना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पना को उन्मुक्त करते हुए उन्हें लिंग, वचन व कारक प्रयोग संबंधी जानकारी जानने के लिए

गतिविधियाँ

छात्रों संकेत के आधार पर वर्ग-पहेली पूरी कीजिए–

संकेत

बाएँ से दाएँ →

1. एक से ज़्यादा कली

ऊपर से नीचे ↓

1. एक से ज़्यादा कली

2. बहन का बहुवचन
3. लड़की का बहुवचन
4. अनेक का बोध कराने वाले
5. कक्षा का बहुवचन
6. डंडे का एकवचन
7. झुमके का एकवचन
8. सेविकाएँ का एकवचन

2. कहानी का बहुवचन
3. लड़के का एकवचन
4. किस्सा का बहुवचन
5. झंडे का एकवचन

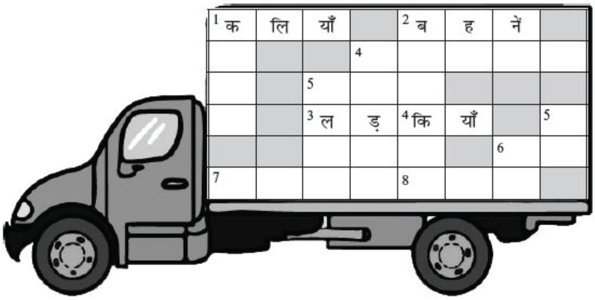

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध संज्ञा के विकार संबंधी जानकारी देने वाली पुस्तकें।
- यूट्यूब पर लिंग, वचन व कारक संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संज्ञा के विकार संबंधी विस्तारपूर्वक जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि संज्ञा में विकार (परिवर्तन) तीन कारणों से होता है—लिंग, वचन और कारक।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को लिंग, वचन व कारक के बारे में बताना तथा उनके भेदों को जानने के लिए उत्सुकता पैदा करना।	• छात्रों को सर्वप्रथम लिंग की परिभाषा बताकर पुल्लिंग व स्त्रीलिंग के बारे में बताएँ कि पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग व स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं। • फिर छात्रों के समक्ष कुछ शब्द बोलकर उनके पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने के बारे में भी पूछ सकते हैं। • लिंग संबंधित सभी नियमों से छात्रों को अवगत कराकर उन्हें बताएँ कि प्रधानमंत्री, डॉक्टर, राष्ट्रपति, इंजीनियर, प्रोफेसर आदि शब्द दोनों लिंगो में समान रहते हैं।

	• उसके बाद वचन की परिभाषा तथा एकवचन व बहुवचन शब्दों से छात्रों को परिचित कराएँ। • छात्रों को समझाएँ कि भाषा की शुद्धता को बनाए रखने के लिए वचन का ज्ञान होना कितना आवश्यक है। • उन्हें अधिक से अधिक एकवचन व बहुवचन शब्दों के उदाहरण पूछें। इससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हो सकेगी तथा वह अपनी बात को सबके समक्ष रखने का प्रयास कर सकेंगे। • वचन परिवर्तन के सभी नियमों को श्यामपट्ट पर उतारकर छात्रों को समझाएँ और बताएँ कि द्रव्यवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा का प्रयोग सदा एकवचन के रूप में होता है। • फिर कारक के बारे में बताएँ कि संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका क्रिया के साथ संबंध पता चलता है, उसे कारक कहते हैं। कारक के आठ भेद होते हैं—कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादन, संबंध, अधिकरण तथा संबोधन कारक। • छात्रों को कुछ वाक्य लिखवाकर उसमें से छात्रों को कारक-चिह्न अलग करने के लिए भी कहा जा सकता है। स्पष्ट करें कि कारक-चिह्नों के बिना वाक्य कितने अजीब और अटपटे से लगते है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. विकारी तत्व किन्हें कहा जाता है?

....

ख. पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्दों से किसका बोध होता है?

....

....

ग. लिंग की पहचान कैसे की जाती है?

....

....

घ. वचन की परिभाषा देते हुए इसके भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

ङ. कारक की परिभाषा देते हुए सभी कारकों को उनके चिह्नों के साथ लिखिए।

....

....

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तित कीजिए-

क. महोदय – ______ ख. ऊँट – ______

ग. दास – ______ घ. ठाकुर – ______

ङ. लुहार – ______ च. श्रीमती – ______

छ. नौकर – ______ ज. अभिनेत्री – ______

3. कोष्ठक में दिए गए उचित शब्दों से खाली स्थान भरिए।

क. उसका .... रो रहा था। (पुत्री/पुत्र)

ख. जयशंकर प्रसाद एक महान .... थे। (लेखिका/लेखक)

ग. .... भोजन पका रही थीं। (माताजी/पिताजी)

घ. आशा भोंसले प्रसिद्ध .... हैं। (गायक/गायिका)

ङ. .... दहाड़ रही थी। (शेरनी/शेर)

4. निम्नलिखित शब्दों के उचित बहुवचन रूप पर (✓) का निशान लगाइए-

क. महिला – महिलाएँ ☐ महिलाने ☐

ख. अध्यापक – अध्यापकगण ☐ अध्यापकजन ☐

ग. कपड़ा – कपड़े ☐ कपड़ों ☐

घ. डिबिया – डिबियाँ ☐ डिब्बों ☐

ङ. ऋतु – ऋतों ☐ ऋतुएँ ☐

च. साधु – साधुएँ ☐ साधुगण ☐

5. निम्नलिखित कारक चिह्नों से वाक्य बनाइए-

क. के लिए – ....

ख. से – ....

ग. अरे! – ....

घ. पर – ....

ङ. को – ....

6. कारकों का मिलान उसके चिह्नों से कीजिए-

	कारक	**चिह्न**
क.	करण	का, की
ख.	संबोधन	से
ग.	कर्ता	को, के लिए
घ.	संबंध	को
ङ.	संप्रदान	ने
च.	कर्म	हे!

7. वचन बदलकर वाक्यों को दोबारा लिखिए-

क. गधे रेंक रहे हैं।

....

ख. यह पौधा सुंदर है।

....

ग. विद्यार्थी पढ़ रहा है।

....

घ. खिड़की खोल दो।

....

ङ. घोड़ा भाग रहा है।

....

सर्वनाम पाठ योजना: 6

आज की अवधारणा

छात्रों को सर्वनाम तथा उसके भेदों की जानकारी देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी पूर्व कक्षाओं में सर्वनाम विषय का सामान्य परिचय प्राप्त कर चुके हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- सर्वनाम की परिभाषा देने में,
- सर्वनाम के सभी भेदों को जानने तथा उनमें अंतर करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- उचित स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करने हेुअवगत कराना।
- सर्वनाम के भेदों से संबंधित शब्दों की पहचान कराना।
- सर्वनाम के उचित भेद के शब्दों का वाक्य प्रयोग करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पनाशक्ति को प्रेरित करते हुए उनमें प्रयोग करने की योग्यता का भाव उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

छात्रों को कोई निबंध अथवा अनुच्छेद देते हुए उसमें से सर्वनाम के भेदों के अनुरुप शब्द अलग करने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में सर्वनाम व उसके भेदों की जानकारी से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर सर्वनाम संबंधी जानकारी के वीडियो क्लिप्स।
- सर्वनाम के भेदों से संबंधित शब्दों का चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें तथा छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरूआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'सर्वनाम' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को सर्वनाम व उसके भेदों की जानकारी देना	• छात्रों, आपको यह ज्ञात ही है कि संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। • उनके साथ आपसी संवाद करते हुए भाषा प्रयोग में सर्वनाम शब्दों की महत्ता से परिचित कराएँ। • उन्हें स्पष्ट करें कि सर्वनाम शब्दों के कारण भाषा में सुंदरता आ जाती है। वहीं यदि हम सर्वनाम शब्द का प्रयोग न करके बार-बार संज्ञा शब्दों का प्रयोग करेंगे तो भाषा अटपटी और नीरस लगेगी तथा पढ़ने में बोझिल प्रतीत होगी। • छात्रों को बताएँ कि सर्वनाम के छह भेद हैं–पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक तथा निजवाचक। • अध्यापक एक-एक करके छात्रों को सर्वनाम के सभी भेदों को उदाहरणदेते हुए स्पष्ट करें। • जब यह ज्ञात हो जाए कि छात्र सर्वनाम के भेदों से पूर्ण रूप से परिचित हो चुके हैं तब उन्हें कई उदाहरण देते हुए उनमें आए सर्वनाम के भेद की पहचान करने को कहें।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक सर्वनाम में अंतर स्पष्ट कीजिए।

....

ख. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेदों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

ग. संबंधवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?

....

घ. सर्वनाम के छह प्रकारों के नाम बताइए।

....

....

2. दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम शब्द को छाँटकर लिखिए।

क. मैं अपने–आप चली जाऊँगी। ____________

ख. बाहर कोई आया है। ____________

ग. मुझे उसकी याद आ रही है। ____________

घ. तुम्हारा नाम क्या है? ____________

ङ. उसने काम कर लिया। ____________

छ. उतना ही खाओ जितना पचा सको। ____________

3. कोष्ठक में दिए गए उचित सर्वनाम शब्दों से रिक्त स्थान भरिए।

क. जैसा बोओगे .... ही काटोगे। (वो/वैसा)

ख. .... आपकी प्रतीक्षा रहेगी। (मुझे/मैं)

ग. .... विद्यालय बहुत अच्छा है। (मैं/हमारा)

घ. जितना पढ़ोगे .... नंबर मिलेंगे। (जितने/उतने)

ङ. .... वृद्ध व्यक्ति की मदद की। (वह/इसने)

4. निम्नलिखित वाक्यों को सर्वनाम के उचित भेदों से मिलाइए–

क.	वहाँ कौन खड़ा है?	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
ख.	वह मेरा घर है।	संबंधवाचक सर्वनाम
ग.	आपको कोई बुला रहा है।	प्रश्नवाचक सर्वनाम
घ.	जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।	निश्चयवाचक सर्वनाम
ङ.	उस लड़के को बुलाओ।	पुरुषवाचक सर्वनाम

विशेषण

पाठ योजना: 7

आज की अवधारणा

छात्रों को विशेषण एवं विशेष्य तथा विशेषण के भेदों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इससे पूर्व कक्षा में पढ़ चुके हैं कि जो शब्द किसी व्यक्ति विशेष की विशेषता बताते हैं वह 'विशेषण' कहलाते हैं।

सीखने का प्रतिफल

- इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–
- विशेषण तथा विशेष्य को परिभाषित करने में,
- विशेषण के सभी भेदों को जानने व उनमें अंतर करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- उचित स्थान पर विशेषण शब्दों का प्रयोग करने हेतु अवगत कराना।
- विशेषण के भेदों से संबंधित शब्दों की पहचान कराना।
- विशेषण के उचित भेद के शब्दों का वाक्य प्रयोग करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पनाशक्ति को प्रेरित करते हुए उनमें विशेषण के उचित भेद का प्रयोग करने की योग्यता का भाव उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

छात्रों को कोई अनुच्छेद देते हुए उसमें से विशेषण के भेदों के शब्द छाँटकर उस भेद का नाम भी लिखें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर विशेषण व उसके भेद संबंधी जानकारी के वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में विशेषण व उसके भेदों की जानकारी से संबंधित पुस्तकें।
- विशेषण के भेदों से संबंधित शब्दों का चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें तथा छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'विशेषण' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को विशेषण व उसके भेदों की जानकारी प्रदान करना।	• छात्रों, किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। वहीं विशेषण शब्द द्वारा जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे 'विशेष्य' कहते हैं। • उन्हें अधिक-से-अधिक उदाहरण देकर विशेषण तथा विशेष्य के मध्य का अंतर स्पष्ट करें। • छात्रों को बताएँ कि विशेषण के चार भेद होते हैं—गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण तथा सार्वनामिक विशेषण। • अध्यापक सभी भेदों को एक-एक करके उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • सभी भेदों को समझाने के पश्चात् छात्रों को यह बताएँ कि विशेषण शब्द किस प्रकार बनाए जाते हैं। • उन्हें स्पष्ट करें कि कुछ शब्द तो मूल रूप से विशेषण होते हैं किंतु कुछ शब्दों में शब्दांश जोड़कर विशेषण शब्द की रचना की जाती है। • छात्रों को पुस्तक से अपने पीछे विशेषण शब्दों का वाचन करवाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए-

क. संख्यावाचक विशेषण के दो भेदों निश्चित संख्यावाचक और अनिश्चित संख्यावाचक में अंतर कीजिए।

....

....

ख. सार्वनामिक विशेषण को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

....

....

ग. परिमाणवाचक विशेषण कितने प्रकार के होते हैं?

....

....

घ. विशेषण तथा विशेष्य में भेद कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित शब्दों से बने उचित विशेषण शब्द में (✓) का निशान लगाइए-

क.	धन	-	धनवान	☐	धनपति	☐
ख.	देखना	-	दिखावटी	☐	देखनीय	☐
ग.	घूमना	-	घूमकर	☐	घुमक्कड़	☐
घ.	ज्ञान	-	ज्ञानी	☐	ज्ञाता	☐
ङ.	धर्म	-	धर्मकार	☐	धार्मिक	☐

3. निर्देशानुसार एक-एक उदाहरण दीजिए-

क. सार्वनामिक विशेषण

....

ख. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

....

ग. गुणवाचक विशेषण

....

घ. निश्चित संख्यावाचक

....

4. सोचिए, समझिए और मिलान कीजिए।

1.	सुहाना	आसमान
2.	तीन किलो	तितली
3.	पतली	लोग
4.	नीला	मौसम
5.	रंग-बिरंगी	लड़की
6.	अधिक	अंगूर

क्रिया पाठ योजना: 8

आज की अवधारणा

छात्रों को क्रिया के बारे में बताना। क्रिया के भेदों से परिचित कराना। अकर्मक व सकर्मक क्रिया में अंतर स्पष्ट करके उदाहरण सहित समझाना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी इससे पूर्व कक्षा में जान चुके हैं कि जो शब्द किसी कार्य के होने को दर्शाता है, वह क्रिया कहलाता है ।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में क्रिया संबंधी जानकारी जानने के प्रति रुचि उत्पन्न होगी और वे सक्षम होंगे–

- क्रिया के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों को ध्यानपूर्वक सुनकर क्रिया का भेद पहचानने में,
- क्रिया के बिना कोई भी वाक्य पूरा नहीं हो सकता है, यह समझाने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को समझाना कि क्रिया शब्दों की जीवन में कितनी उपयोगिता है।
- अकर्मक व सकर्मक क्रियाओं की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना।
- अपने आस-पास के उदाहरणों के माध्यम से क्रिया के महत्व को स्पष्ट करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में क्रिया के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

एक चार्ट पेपर पर कोई एक चित्र बनाइए तथा उस चित्र का वर्णन करके क्रिया वाले शब्दों को रेखांकित कीजिए।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध क्रिया संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अकर्मक व सकर्मक पहचान संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में क्रिया के भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि क्रिया शब्दों से हमें किसी भी कार्य के करने या होने की सूचना मिलती है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को क्रिया के संबंध में बताना। उनमें क्रिया के संबंध में जानने हेतु उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ क्रिया के दो भेद होते हैं—अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया। • श्यामपट्ट पर अकर्मक व सकर्मक क्रिया की परिभाषा उदाहरण सहित छात्रों को स्पष्ट करने के बाद करने वाली व स्वयं होने वाली क्रियाओं के बारे में पूछें। • विद्यालय से घर जाते समय छात्र जो-जो क्रियाएँ देखते हैं, उस पर उनके साथ चर्चा करें। • उन्हें बताएँ कि क्रिया के साथ क्या / किसे / किसको लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर मिले तो, सकर्मक क्रिया होती है। • छात्रों को बताएँ कि कुछ क्रियाएँ अकर्मक व सकर्मक दोनों होती हैं और प्रसंग अथवा अर्थ के अनुसार इनके भेद का निर्णय किया जाता है। • अकर्मक क्रिया बिना कर्म की क्रिया होती है। अकर्मक क्रिया की पहचान के लिए वाक्य में 'क्या' या 'किसे' लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर नहीं मिलता है। • उन्हें अवगत कराएँ कि लिंग, कारक तथा वचन में परिवर्तन होने पर क्रिया का रूप बदल जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. क्रिया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

....

ख. सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में भेद कीजिए।

....

....

ग. धातु किसे कहते हैं?

....

घ. क्रिया का रूप कब बदलता है?

....

2. निम्नलिखित वाक्यों में कर्ता पर गोला तथा कर्म को रेखांकित कीजिए-

क. छात्र पाठ पढ़ रहे हैं।

ख. ऋतु ने गिटार बजाना सीखा।

ग. राशि गाना गा चुकी।

घ. श्रीकृष्ण ने कंस को मारा।

ङ. टोकरी में सेब रखे हैं।

3. सर्वनाम शब्दों को सर्वनाम के भेदों से सुमेलित कीजिए।

क. मल –	________	ख. नहा –	________
ग. गा –	________	घ. रख –	________
ङ. सो –	________	च. पच –	________

4. क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ दूर करके वाक्यों को दोबारा लिखिए।

क. बच्चे खेल रहा है।

....

ख. नर्स रोगियों को दवा दे रहे हैं।

....

ग. महेश जल्दी-जल्दी चले जा रहा है।

....

घ. माता जी खाना बनाए रही हैं।

....

ड. हम सबको बताए दिए थे।

....

5. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को पहचानकर उसके आगे क्रिया का भेद लिखिए।

क. पिताजी अखबार पढ़ रहे हैं। ________

ख. लड़कियाँ विद्यालय जा रही हैं। ________

ग. वह पत्र लिख चुका है। ________

घ. माताजी सेब ले आई। ________

काल

पाठ योजनाः 9

आज की अवधारणा

छात्रों को काल के बारे में बताना। काल के भेदों से परिचित कराना तथा भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत काल में अंतर स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी पूर्व कक्षा में पढ़ चुके हैं कि व्याकरण में काल का अर्थ समय है तथा काल शब्द से हमें काम होने के समय के बारे में पता चलता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में काल संबंधी जानकारी जानने के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- काल के बारे में सोचने और विचार करने में,
- काल के तीनों भेदों को परिभाषित करने में,
- भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल में अंतर स्पष्ट करने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- दैनिक जीवन में काल के महत्व से अवगत कराना।
- काल की पहचान संबंधी नियमों को बताना।
- काल के प्रयोग को अच्छे से समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पनाशक्ति को प्रेरित करते हुए उन्हें काल के प्रत्येक भेद का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाने की योग्यता का भाव उत्पन्न करना।

गतिविधियाँ

आप सोच समझकर लिखिए कि कल आपने क्या-क्या काम किया था, अभी क्या कर रहे हैं तथा कल क्या-क्या करेंगे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर काल व उसके भेद संबंधी जानकारी के वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में काल संबंधी पुस्तकें।
- कक्षा में काल के भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें तथा छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ नए अध्याय 'काल' से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि काल शब्द से हमें समय का बोध होता है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को काल के संबंध में बताना। उनमें काल के भेदों को जानने संबंधी उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि काल के तीन भेद होते हैं। भूतकाल से हमें क्रिया के बीते समय में पूरा होने का बोध होता है। वर्तमान काल से क्रिया के वर्तमान समय में कार्य के होने का पता चलता है। वहीं भविष्यत काल से क्रिया के आने वाले समय में होने की जानकारी मिलती हैं। • तीनों कालों की परिभाषा श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों को उदाहरण सहित स्पष्ट करें। • छात्रों के तीन अलग-अलग समूह बनाएँ और एक समूह को भूतकाल, दूसरे को वर्तमान तथा तीसरे को भविष्यत काल से संबंधित वाक्य बनाने को कहें। उसके बाद एक-एक छात्र को प्रत्येक समूह से आकर अपने काल का वाक्य बोलने को कहें। जिससे सभी छात्र काल के भेदों को अच्छी तरह समझ पाएँगे। • छात्रों को बताएँ कि वह काल को उनके क्रि या रूप से भी पहचान सकते हैं। • उन्हें काल के तीनों भेदों के आधार पर अपनी दिनचर्या के दस वाक्य लिखकर लाने को कहें। • श्यामपट्ट पर कुछ क्रिया शब्द लिखकर उन्हें काल के तीनों भेदों में परिवर्तित करने को भी कहा जा सकता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क. काल को परिभाषित कीजिए।

....

ख. भूतकाल तथा वर्तमान काल में भेद कीजिए।

....

....

ग. आप अपनी माताजी के साथ बाजार के लिए निकलेंगे। यह क्रिया कौन-से काल की है?

....

2. निम्नलिखित क्रिया शब्दों से तीनों कालों की वाक्य-रचना कीजिए-

क. खेलना →

....

....

....

ख. लिखना →

....

....

....

3. निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार काल परिवर्तन करके लिखिए-

क. आप आगरा घूमने कब गए। (भविष्यत काल)

....

ख. दादाजी पार्क में टहल रहे हैं। (भविष्यत काल)

....

ग. वह विद्यालय जा रहा है। (भूतकाल काल)

....

घ. नानाजी और नानी जी आज घर पहुँचेंगे। (वर्तमान काल)

....

ड. यह मेरा घर था। (वर्तमान काल)

....

4. निम्नलिखित वाक्यों में कौन-सा काल है-

क. हम वहाँ जाएँगे।

भूतकाल वर्तमान काल भविष्यत काल

ख. वह मैच देख रहा है।

भूतकाल वर्तमान काल भविष्यत काल

ग. वरुण गृहकार्य कर चुका है।

भूतकाल वर्तमान काल भविष्यत काल

घ. आप कहाँ गए थे।

भूतकाल वर्तमान काल भविष्यत काल

ङ. हम सब वहाँ जाएँगे।

भूतकाल　　　　वर्तमान काल　　　　भविष्यत काल

च. राधिका आज पार्टी में जाएगी।

भूतकाल　　　　वर्तमान काल　　　　भविष्यत काल

5. वाक्य के हिस्सों को सुमेलित कीजिए-

क.	बरतन	पढ़ी।
ख.	चिड़ियाँ आसमान में	मँडरा रही हैं।
ग.	राहुल ने किताब	उड़ रही हैं।
घ.	फूलों पर तितलियाँ	धुल गए।
ङ.	माताजी कपड़े	खा चुकी।
च.	नेहा खाना	धो रही हैं।

अव्यय शब्द

पाठ योजनाः 10

आज की अवधारणा

छात्रों को अव्यय से परिचित कराते हुए इसके भेदों के नामों की जानकारी देना तथा अव्यय के प्रथम भेद क्रियाविशेषण एवं इसके भेदों को स्पष्ट करना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि जिन शब्दों में काल के अनुसार परिवर्तन होता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं तथा जिन शब्दों में काल के अनुसार परिवर्तन नहीं होता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम होंगे–

- अव्यय के भेदों के नाम जान सकेंगे,
- क्रियाविशेषण को परिभाषित करते हुए इसके भेदों में अंतर कर सकेंगे।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को क्रियाविशेषण के भेदों से संबंधित शब्दों की पहचान कराना।
- उचित स्थान पर क्रियाविशेषण शब्दों का प्रयोग करने हेतु अवगत कराना।
- क्रियाविशेषण के उचित भेद के शब्दों का वाक्य प्रयोग करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पनाशक्ति को प्रेरित करते हुए उनमें क्रियाविशेषण के उचित भेद का प्रयोग करने की योग्यता विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को प्रेरक कहानी सुनाएँ तथा छात्र उसमें आए क्रियाविशेषण शब्दों को अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखें। अंततः अध्यापक छात्रों को कहानी में आए क्रियाविशेषण शब्दों को बताएँ तथा छात्र अपने लिखे शब्दों की जाँच करें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में क्रियाविशेषण व उसके भेदों की जानकारी से संबंधित पुस्तकें।
- यूट्यूब पर सर्वनाम संबंधी जानकारी के वीडियो क्लिप्स।

- अव्यय के भेदों को दर्शाता चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें तथा छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अव्यय शब्द' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को क्रियाविशेषण व उसके भेदों की जानकारी देना।	• छात्रों, जिन शब्दों में लिंग, वचन, काल के प्रभाव के कारण परिवर्तन नहीं होता, उन्हें 'अव्यय' कहते हैं। • अव्यय के चार भेद हैं—क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक। • क्रियाविशेषण के बारे में बताएँ कि क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'क्रियाविशेषण' कहते हैं। • उन्हें बताएँ कि इसके चार भेद हैं—रीतिवाचक, कालवाचक, स्थानवाचक एवं परिमाणवाचक। • छात्रों को एक-एक करके सभी भेदों को उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • अब अध्यापक कक्षा को दो टीमों में विभाजित करें तथा छात्रों को कुछ उदाहरण देते हुए उनमें से क्रियाविशेषण शब्द छाँटकर बताने को कहें। इस तरह खेल-खेल में छात्रों को इन शब्दों की पहचान करना सिखाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए-**

   क. सदा सच बोलना चाहिए।

   ख. खूब व्यायाम करना चाहिए।

   ग. अचानक हुदहुद तूफान आने से लोग सँभल न सके।

   घ. मैंने आपको पहले नहीं देखा है।

   ङ. इधर क्यों आ रहे हो?

च. हम स्टेशन पहुँचे और रेलगाड़ी तुरंत ही आ गई।

2. कोष्ठक में दिए गए क्रिया शब्दों का सही रूप लिखकर खाली स्थान भरिए।

क. रुचिका बहुत सोती है। ____________

ख. श्वेता प्रतिदिन व्यायाम करती है। ____________

ग. उसने यात्रियों को नीचे उतारा। ____________

घ. अभी आए और अभी चल दिए। ____________

ङ. वह परसों गाँव चला गया। ____________

3. निम्नलिखित स्थानों में उचित क्रियाविशेषण शब्द भरिए-

क. विक्रांत ____________ से गिर पड़ा।

ख. मोहन, तुम ____________ बोलते हो, ____________ बोलो।

ग. राकेश, सोनालिका के ____________ ओर खड़ा है।

घ. लेकिन वह ____________ जा रहा है।

ङ. सिद्धार्थ ने ____________ हुए कहा।

वाक्य पाठ योजनाः 11

आज की अवधारणा

छात्रों को वाक्य के बारे में बताना। वाक्य के अंग-उद्देश्य व विधेय को समझाना। रचना तथा अर्थ की दृष्टि से वाक्य के भेदों को जानना। सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य समझना। अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठों भेदों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र भाषा में वाक्यों का प्रयोग करते आ रहे हैं तथा जानते हैं कि कई शब्दों से वाक्य बनता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- उद्देश्य व विधेय के बारे में जानने में,
- सरल, संयुक्त व मिश्र वाक्य में अंतर करने में,
- अर्थ व रचना की दृष्टि से वाक्य के भेदों के नाम जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि वाक्य के कितने अंग हैं तथा वे कौन-कौन से हैं।
- वाक्य के उद्देश्य और विधेय की पहचान कराना।
- सरल, संयुक्त एवं मिश्रित वाक्यों में अंतर समझाना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों की कल्पना को उन्मुक्त करते हुए उन्हें सरल, संयुक्त व मिश्रित वाक्य बनाने के लिए प्रेरित करना।

गतिविधियाँ

कोई विषय देकर छात्रों को उस पर कुछ पंक्तियाँ बोलने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- यूट्यूब पर वाक्य-विचार संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय के पुस्तकालय में वाक्य-विचार संबंधित पुस्तकें।
- कक्षा में वाक्य के अंग व उसके भेदों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें तथा छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'वाक्य' से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि वाक्य भाषा की आधारशिला होते हैं। यह किसी भाव या विचार को पूर्ण रूप से प्रकट करने वाले पद समूह होते हैं जिन्हें वाक्य कहा जाता है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को 'वाक्य' के संबंध में बताना। उनमें वाक्य के अंग व भेदों को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को सर्वप्रथम यह बताएँ कि किसी भी वाक्य में दो गुण होने बहुत आवश्यक हैं। पहला, उसमें सार्थक शब्दों का प्रयोग किया जाए तथा दूसरा, शब्दों को व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रमबद्ध तरीके से दिया जाए। • वाक्य के दो अंग होते हैं–उद्देश्य और विधेय। वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं तथा उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं। • उद्देश्य और विधेय छाँटते समय वाक्य के कर्ता को उद्देश्य तथा अन्य पदों को विधेय के अंतर्गत रखते हैं। • उन्हें बताएँ कि वाक्य में उद्देश्य कभी-कभी अकेले आते हैं तो कभी-कभी उद्देश्य के साथ उनकी विशेषता बताने वाले शब्द भी आते हैं। • रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं। श्यामपट्ट पर सरल, संयुक्त तथा मिश्र वाक्य की परिभाषा उदाहरण सहित लिखकर समझाएँ। • फिर बताएँ कि अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं– कथनात्मक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, आज्ञार्थक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य। • अर्थ के आधार पर वाक्य के सभी भेदों को उदाहरण सहित समझाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

    क. वाक्य को परिभाषित करते हुए उद्देश्य तथा विधेय को स्पष्ट कीजिए।

    ....

    ख. रचना की दृष्टि से वाक्यों को कितने भेदों में बाँटा गया है तथा उनके नाम बताइए।

    ....

    ग. अर्थ की दृष्टि से किए गए वाक्य के आठों भेदों को बताइए।

    ....

    घ. संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य में भेद कीजिए।

    ....

2. **उचित उद्देश्य से खाली स्थान भरिए-**

    क. .... में अनेक फूल खिले हैं।

    ख. .... अंग्रेजी पढ़ाती है।

    ग. .... प्रतिदिन विद्यालय जाता है।

    घ. .... स्कूल आया पर मुझसे नहीं मिला।

3. **निम्नलिखित शब्दों के सही क्रम लगाकर उपयुक्त वाक्य बनाइए-**

    क. सूर्य उगता है से पूर्व।

    ....

    ख. राष्ट्रपिता जी हैं गांधी भारत के।

    ....

    ग. खा आम रोहन गया सारे।

    ....

    घ. उठा जल्दी सुबह करो।

    ....

    ङ. होगा वह तक अब चला गया।

    ....

4. **निम्नलिखित वाक्यों में विधेय को रेखांकित कीजिए-**

    क. कृषिता एक अच्छी लड़की है।

    ख. पंखा धीरे चल रहा है।

    ग. नेहा कक्षा में प्रथम आई।

    घ. पिताजी आज देर से आएँगे।

5. रचना के आधार पर उचित भेद में (✓) का निशान लगाइए।

क. जैसे ही वह स्कूल से निकली वैसे ही तेज बारिश होने लगी।

सरल वाक्य संयुक्त वाक्य मिश्र वाक्य

ख. माताजी बाजार गई और जल्दी से लौट आईं।

सरल वाक्य संयुक्त वाक्य मिश्र वाक्य

ग. तुम यहाँ आना और अपनी पुस्तक ले जाना।

सरल वाक्य संयुक्त वाक्य मिश्र वाक्य

घ. शांति से बैठो।

सरल वाक्य संयुक्त वाक्य मिश्र वाक्य

ङ. मोर नाच रहा है।

सरल वाक्य संयुक्त वाक्य मिश्र वाक्य

शब्द भंडार पाठ योजनाः 12

आज की अवधारणा

छात्रों को शब्द-भंडार के अंतर्गत पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द तथा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की परिभाषा देते हुए अधिक-से-अधिक उदाहरण देना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी पूर्व कक्षाओं में भी पर्यायवाची, विलोम तथा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द पढ़ चुके हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- पर्यायवाची, विलोम तथा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द को परिभाषित कर सकेंगे।
- अनेक शब्दों में एक शब्द का प्रयोग करते हुए कम शब्दों में अपनी बात कह सकेंगे।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की क्या महत्ता है।
- भाषा प्रयोग के दौरान पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करना।

लक्ष्य कौशल

कम शब्दों में कही गई बात सदा प्रभावी होती है। ठीक उसी प्रकार, हम सबको भी अधिक बोलने की अपेक्षा अपने कार्य को सही ढंग से करने पर ध्यान देना चाहिए, इस बात के समझने की योग्यता छात्रों के भीतर विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक वाक्यांश की परचियाँ बनाकर टोकरी में रखें। कक्षा को चार समूहों में बाँटें। प्रत्येक समूह से एक प्रतिनिधि को बुलाकर परची उठवाएँ और परची में लिखे वाक्यांश के लिए एक शब्द पूछें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में शब्द-भंडार संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर पर्यायवाची, विलोम तथा वाक्यांश के लिए एक शब्द संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- पर्यायवाची, विलोम तथा वाक्यांश के लिए एक शब्द संबंधी चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय से की जाएगी। छात्रों को आज की अवधारणा से परिचित कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को पर्यायवाची, विलोम तथा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का बोध कराना।	• छात्रों, एक समान अर्थ बताने वाले शब्दों को 'समानार्थी शब्द' या 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं। • छात्रों को पाठ से पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • उनसे भी पूछें कि आप किन-किन शब्दों के पर्यायवाची शब्द जानते हैं। वे शब्द तथा अनेक समानार्थी शब्द भी बताएँ। • पर्यायवाची शब्द बताने के पश्चात् उन्हें बताएँ कि एक-दूसरे के विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को 'विलोम शब्द' कहते हैं। • छात्रों को बताएँ कि वाक्य-संरचना में विलोम शब्दों का अत्यधिक महत्व होता है। विलोम शब्द से अर्थ की गुणवत्ता बढ़ जाती है। • छात्रों को पाठ से विलोम शब्दों के उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें। • तत्पश्चात् उन्हें बताएँ कि अपनी बात को कम शब्दों में स्पष्ट रूप से कहने के लिए अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग किया जाता है। • इससे भाषा स्पष्ट एवं प्रभावशाली बनती है। • उन्हें पाठ से अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के उदाहरण देते हुए स्पष्ट करें कि ऐसे शब्दों का ज्ञान होना जरूरी है, क्योंकि कम शब्दों में बात कहना भी एक कला है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित शब्दों के उत्तर दीजिए।

क. विलोम शब्द किन्हें कहते हैं?

....

ख. अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है?

....

ग. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द किन्हें कहते हैं?

....

घ. अनेकार्थक शब्द कौन-से होते हैं?

....

2. निम्नलिखित शब्दों के लिए अनेक शब्द अर्थात् वाक्यांश का प्रयोग कीजिए-

क. पथ-प्रदर्शक - ____________________

ख. स्वावलंबी - ____________________

ग. जितेंद्रिय - ____________________

घ. आवेदक - ____________________

ङ. अदम्य - ____________________

3. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

क. इंद्र - __________ __________ __________

ख. प्रकाश - __________ __________ __________

ग. बिजली - __________ __________ __________

घ. विष्णु - __________ __________ __________

ङ. सुंदर - __________ __________ __________

4. निम्नलिखित वाक्यों को रेखांकित शब्दों के विलोम शब्दों से पूरा कीजिए।

क.	अवनति	दंड
ख.	अंत	कृतघ्न
ग.	मुख्य	उन्नति
घ.	विकास	आदि
ङ.	दुर्जन	गौण
च.	पुरस्कार	समर्थन
छ.	कृतज्ञ	ह्रास
ज.	विरोध	सज्जन

मुहावरे और लोकोक्तियाँ पाठ योजनाः 13

आज की अवधारणा

छात्रों को मुहावरे और लोकोक्तियों के बारे में बताना। उनकी परिभाषा से अवगत कराकर उनका सही ढंग से प्रयोग करना बताना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि मुहावरे और लोकोक्तियाँ लेखन-कला को रोचक व मनोरंजक बना देते हैं।

सीखने का प्रतिफल

- इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में मुहावरे व लोकोक्ति जानकारी संबंधी रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–
- मुहावरे व लोकोक्ति के बारे में सोचने और विचार करने में,
- मुहावरों के नाम व उनका अर्थ जानने में
- दैनिक जीवन में मुहावरे व लोकोक्ति का महत्व जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को समझाना कि मुहावरे व लोकोक्तियाँ क्या हैं।
- भाषा में मुहावरे व लोकोक्ति की कितनी उपयोगिता है।
- मुहावरे व लोकोक्ति के प्रयोगों को बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में मुहावरे व लोकोक्तियों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

निम्नलिखित शरीर के अंगों के चित्र कार्य-पुस्तिका में चिपकाइए और उनसे संबंधित एक-एक मुहावरा भी लिखिए–

आँख अँगूठा नाक दाँत उँगलियाँ

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध मुहावरे व लोकोक्ति संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर मुहावरों व लोकोक्तियों के अर्थ संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- विद्यालय में मुहावरे तथा लोकोक्तियों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि मुहावरे का प्रयोग वाक्यांश की तरह किया जाता है, जबकि लोकोक्ति अपने-आप में पूर्ण तथा स्वतंत्र होती है।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्यः छात्रों को मुहावरे व लोकोक्ति के बारे में बताना। उनमें मुहावरों व लोकोक्तियों को जानने के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि अपने मूल अर्थ का बोध न कराकर विशेष अर्थ का बोध कराने वाले वाक्यांश मुहावरे कहलाते हैं। • मुहावरे एक ऐसा वाक्यांश होते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ न होकर लाक्षणिक अर्थ होता है। जब इसका प्रयोग वाक्य में करते हैं तो यह क्रिया, लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार इसमें परिवर्तन होता है। • उन्हें बताएँ कि मुहावरे प्रयोग करने से वाक्य का अर्थ अत्यंत रोचक और आकर्षक हो जाता है। • अध्यापक श्यामपट्ट पर एक वर्ग-पहेली बनाकर उसमें मुहावरे लिखें। फिर छात्रों को उनमें से मुहावरे ढूँढ़कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें तथा उसका अर्थ सहित वाक्य प्रयोग करें। • फिर उन्हें लोकोक्ति के बारे में बताएँ कि लोकोक्ति शब्द 'लोक' और 'उक्ति' शब्द से मिलकर बना है। इन दो शब्दों के मेल से लोकोक्ति शब्द बना है। लोकोक्ति का अर्थ होता है—जनसाधारण की उक्ति। इसे 'कहावत' भी कहते हैं। लोग आम बोलचाल की भाषा में कहावतों का प्रयोग करते हैं। यह लोगों के अनुभवों पर आधारित होती है। • छात्रों को मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर समझाएँ कि मुहावरे का प्रयोग किसके अंतर्गत होता है और लोकोक्ति का प्रयोग किसके अंतर्गत आता है। • जान लें कि लोकोक्ति अपने शब्दों का दूसरा अर्थ नहीं देती है। • बच्चों को चित्र की सहायता से मुहावरों व लोकोक्तियों के अर्थ समझाएँ ताकि वे इनसे भली-भाँति परिचित हो सकें।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

क. लोकोक्ति किन दो शब्दों के मेल से बना है तथा इसका अर्थ बताइए।

....

....

ख. मुहावरे तथा लोकोक्ति में क्या अंतर है?

....

....

ग. मुहावरे किन्हें कहा जाता है?

....

2. लोकोक्तियों का उनके अर्थ से मिलान कीजिए।

क. सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना — एक मुसीबत होने पर दूसरी मुसीबत भी आ जाना।

ख. आँख के अंधे नाम नैनसुख — एकता में शक्ति होती है।

ग. ऊँची दुकान फीका पकवान — गुण के विपरीत नाम होना।

घ. एक और एक ग्यारह — दिखावा अधिक, किंतु वास्तविकता कम।

ङ. कंगाली में आटा गीला — कार्य प्रारंभ करते ही विघ्न पड़ना।

3. उचित मुहावरे से खाली स्थान भरिए।

क. क्रिकेट मैच में भारत ने पाकिस्तान के .... दिए।

ख. गोलगप्पे तथा चाट देखकर मेरे ....।

ग. हमें घर के कामों में माता-पिता का .... चाहिए।

घ. प्रतीक्षा के प्रथम आने पर उसकी माताजी ....।

ङ. भूख के मारे मेरे .... लगे।

4. दिए गए मुहावरों के सही अर्थ पर (✓) का निशान लगाइए।

क. कमर कसना–

तैयार होना — कमर को रस्सी से बाँधना

ख. आँखों में धूल झोंकना–

धोखा देना — मिट्टी फेंकना

ग. उँगली उठाना–
उँगली ऊपर करना   दोष निकालना

घ. आँसू पोंछना–
आँसू साफ करना   धीरज बँधाना

5. निम्नलिखित लोकोक्तियों तथा मुहावरों का क्रम ठीक कीजिए–

क. फीकी दुकान ऊँचे पकवान–

....

ख. घड़ा चिकना होना–

....

ग. ताड़ का तिल बनाना–

....

घ. कटी दाँत रोटी होना–

....

ङ. कभी गाड़ी में नाव गाड़ी कभी नाव में–

....

च. तेते लंबी सौर जेती पाँव पसारिए–

विराम-चिह्न पाठ योजनाः 14

आज की अवधारणा

छात्रों को विराम-चिह्न के बारे में बताना। उसकी परिभाषा से अवगत कराना। महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी विराम-चिह्नों के कुछ महत्वपूर्ण चिह्नों से पहले ही परिचित हैं। वह जानते हैं कि गार्ड के संकेतों पर जिस तरह गाड़ी रुकती और चलती है, उसी प्रकार विराम-चिह्न भी लेखन कार्य में अपने चिह्नों से रुकने व चलने की अनुमति देते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में विराम-चिह्नों के प्रयोगों के प्रति रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- विराम-चिह्नों के बारे में सोचने और विचार करने में,
- वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसमें लगने वाले विराम-चिह्नों को पहचानने में,
- विभिन्न चिह्नों को देखकर उस विराम-चिह्न का नाम बताने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा में विराम-चिह्नों की कितनी उपयोगिता है।
- सभी महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों की अलग-अलग उपयोगिताओं को समझाना।
- छात्रों को यह बताना कि हिंदी व्याकरण में विराम-चिह्नों का बहुत महत्व है।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विराम-चिह्नों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

किसी महत्वपूर्ण विषय पर छात्रों को एक अनुच्छेद लिखने को देना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध विराम-चिह्न संबंधी जानकारी देने वाली पुस्तकें।

- यूट्यूब पर विराम-चिह्न प्रयोग संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में महत्वपूर्ण विराम-चिह्नों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। कुल समय: पाँच मिनट	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि विराम का अर्थ रुकना होता है। पढ़ते व लिखते समय वाक्यों में रुकने के लिए लगाए गए चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को विराम-चिह्नों के बारे में बताना तथा प्रयोग के संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि व्याकरण में विराम-चिह्न की कितनी उपयोगिता है। मुख्य रूप से हिंदी भाषा में कई प्रकार के विराम-चिह्न हैं। • पूर्ण विराम (।) का प्रयोग वाक्य के समाप्त होने पर किया जाता है। वहीं वाक्य को पढ़ते व लिखते समय बीच-बीच में थोड़ा रुकने के लिए अल्प विराम चिह्न (,) लगाया जाता है। • अब उन्हें अद्र्ध विराम (;) के बारे में बताएँ कि इस चिह्न का प्रयोग तब होता है। जब वाक्य पूर्ण होने की स्थिति में हो किंतु उसमें कोई और बात जोड़ी जा रही है। जिसके कारण वाक्य पूरा न हुआ हो। • वहीं आश्चर्य, घृणा, हर्ष, विस्मय आदि को प्रकट करने के लिए विस्मय-वाचक शब्दों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है और दो शब्दों को जोड़ने के लिए योजक चिह्न (–) का प्रयोग होता है। • उसके बाद प्रश्नवाचक चिह्न (?) के बारे में जानें कि इसका प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में किया जाता है। इसके अलावा उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं—इकहरा उद्धरण चिह्न (‘ ’) तथा दूसरा दोहरा उद्धरण चिह्न (“ ”)। • जब छात्र इन सभी चिह्नों से परिचित हो जाएँ फिर बताएँ कि किसी शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक चिह्न ( ) का प्रयोग होता है। वहीं उदाहरण या अग्रलिखित का संकेत करने के लिए अपूर्ण विराम (:) का प्रयोग होता है। जान लें कि नाटक आदि में संवाद से पहले भी इसका प्रयोग किया जाता है।

	• अंत में उन्हें निर्देशक व लाघव चिह्न की परिभाषा उदाहरण सहित स्पष्ट करके समझाएँ। • छात्रों के अलग-अलग समूह बनाएँ और अध्यापक श्यामपट्ट पर विराम-चिह्नों से संबंधित वाक्य लिखें। फिर प्रत्येक समूह के छात्रों से पूछें कि यह वाक्य किसके अंतर्गत आते हैं। • अध्यापक विराम-चिह्नों का अच्छी तरह से अभ्यास कराएँ और विराम-चिह्नों की महत्ता की जानकारी दें। • उन्हें समझाएँ कि हिंदी भाषा में अगर विराम-चिह्नो का प्रयोग नहीं हुआ होता तो वाक्य के अर्थ स्पष्ट नहीं होते।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य: अधिगम मूल्यांकन समय: पाँच मिनट	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

क. विराम - चिह्न किसे कहते हैं?

....

....

ख. पूर्ण विराम से कम और अल्पविराम से अधिक समय के लिए हम कौन-से विराम-चिह्न का प्रयोग करते हैं?

....

ग. विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किन भावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है?

....

घ. उद्धरण चिह्न कितने प्रकार का होता है? स्पष्ट कीजिए।

....

....

2. निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए-

क. लाघव चिह्न (.)-

....

ख. अपूर्ण विराम (:)-

....

ग. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)-

....

घ. कोष्ठक (( ))-

....

3. निम्नलिखित विराम-चिह्नों को उनके नाम से मिलाइए-

क. अर्ध विराम	(‘ ’)
ख. अल्प विराम	(.)
ग. निर्देशक चिह्न	(“ ”)
घ. लाघव चिह्न	(;)
ङ. दोहरा उद्धरण चिह्न	(–)
च. इकहरा उद्धरण चिह्न	(,)

4. निम्नलिखित वाक्यों में उचित जगह पर विराम-चिह्न लगाकर वाक्य को दोबारा लिखिए-

क. छिः कितनी मक्खियाँ हैं।

....

ख. भाई साहब यहाँ आइए।

....

ग. काल के तीन भेद हैं भूतकाल वर्तमान और भविष्यत काल।

....

घ. डॉ भीमराव अंबेडकर प्रमुख रूप से दलित समाज सुधारक थे।

....

अपठित बोध　　　　पाठ योजना: 15

आज की अवधारणा

छात्रों को अपठित गद्यांश के बारे में बताना। उसके अर्थ से परिचित कराना व परिभाषा का ज्ञान कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि अपठित बोध में गद्यांश के आधार पर कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनका उत्तर गद्यांश में से ही देना होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों में अपठित बोध संबंधी रुचि जागृत होगी और वे सक्षम होंगे–

- अपठित बोध के बारे में सोचने और विचार करने में,
- गद्यांशों को ध्यान से पढ़कर उसके उत्तर ढूँढने में,
- अपठित बोध के अंतर्गत कौन-कौन से प्रश्न आते हैं, यह जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को यह समझाना कि भाषा में अपठित बोध की कितनी उपयोगिता है।
- अपठित बोध का महत्व समझाना तथा उसको जानने के प्रति छात्रों में उत्सुकता उत्पन्न करना और उनकी जानकारी देना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अपठित बोध के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

कोई भी गद्यांश देकर छात्रों को उसके प्रश्न लिखवाना तथा उत्तर अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखकर लाने को कहना।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध अपठित बोध संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अपठित बोध को लेकर ध्यान रखने योग्य आवश्यक बातें जानने संबंधी वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में अपठित बोध के आवश्यक नियमों की जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज व्याकरण के एक महत्वपूर्ण विषय 'अपठित बोध' पर हम चर्चा करने जा रहे हैं।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को अपठित बोध के बारे में बताना तथा उसके संबंध में उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि अपठित का अर्थ होता है, जिसे पहले न पढ़ा गया हो अर्थात् अपठित गद्यांश गद्य का एक ऐसा अंश होता है, जिसे आपने पहले पाठ्यपुस्तक में न पढ़ा हो। • अपठित गद्यांश का अभ्यास करने से रचनात्मक क्षमता और सामान्य जानकारी भी बढ़ती है। • इसमें गद्यांश में से ही प्रश्नों के उत्तर को देना होता है। • अपठित गद्यांश को अच्छी तरह समझाने के लिए उन्हें बताएँ कि छात्रों को दिए गए गद्यांश को दो-तीन बार पहले ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। • तत्पश्चात् उसके प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए। ध्यान रखें कि प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट तथा संक्षिप्त होने चाहिए तथा उनमें अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। • प्रश्न में 'शीर्षक' का प्रश्न पूछे जाने पर गद्यांश के भावार्थ का पढ़कर अनुमान लगाना चाहिए कि गद्यांश में किसकी या किसके बारे में बात की जा रही है। उसी से मिलता-जुलता शीर्षक देना चाहिए। • इसके उत्तर को देने में मुहावरे व लोकोक्ति का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए। • अध्यापक छात्रों के अलग-अलग समूह बनाए और पुस्तक में से अपठित बोध का चयन करके श्यामपट्ट पर उसके प्रश्न लिखे। फिर छात्रों को उस अपठित बोध को पढ़ने को कहें। अंत में प्रत्येक समूह से छात्रों को बुलाएँ और श्यामपट्ट पर लिखे गए प्रश्न का उत्तर लिखने को कहें। इससे सभी छात्र भली-भाँति अपठित बोध को समझ सकेंगे।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. भगवान महावीर राजगृह में एकांत साधना कर रहे थे। बीच-बीच में उनका प्रवचन चलता फिर वे एकांत साधना में लीन हो जाते। स्वर्ग में भी महावीर की इस कठोर तपस्या की जोर-शोर से चर्चा थी। यह बात इंद्र की सभा के एक देवता को रास नहीं आई। उसने महावीर की तपस्या को खंडित करने की सोची। क्षण भर में ही वह महावीर की साधना-स्थली तक जा पहुँचा और अपने देव बल से उनकी तपस्या को भंग करने की चेष्टा करने लगा, परंतु पूरे छह माह तक कठोर यातनाएँ सहकर भी वे विचलित न हुए तब देव बोले-"मुनिश्रेष्ठ क्षमा करें। आप तपस्वियों में श्रेष्ठ हैं। यह मैंने जान लिया है आप साधनारत रहें, मैं जाता हूँ। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो कहना, संकोच न करना।" यह सुनकर महावीर का शांत वदन असीम वेदना से भर उठा। देव ने पूछा-"मुनिवर कहिए क्या कष्ट है आपको। मैं आपके सभी कष्ट दूर कर सकता हूँ।" महावीर बोले-"नहीं, यह संभव नहीं, क्योंकि कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है।" महावीर ने कहना आरंभ किया-"देखो, तुमने छः माह तक मुझे पीड़ा पहुँचाने का यत्न किया लेकिन इससे मुझे वेदना नहीं हुई, पर इस कर्म में तुम्हारे ऊपर एक बोझ आ गया, जिसे तुम्हें भोगना ही पड़ेगा। मेरी वेदना यह है कि तुम्हारे पतन का कारण मैं हूँ। मेरे कारण तुम्हें कष्ट पहुँचेगा मुझे इसी की वेदना है।" देव का समस्त अहंकार चूर-चूर हो गया, क्योंकि उदारता और महानता का वृहद् ज्योतिपुंज उसके समक्ष सत्य प्रकाशित कर रहा था।

उपर्युक्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. महावीर की पीड़ा का क्या कारण था?

ख. देव ने महावीर की साधना को देखकर क्या निर्णय लिया?

ग. महावीर पर देव के प्रयासों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

घ. 'जोश' और 'पहरा' शब्दों के विशेषण रूप लिखिए।

ङ. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(अ) देवता - ____________

(ब) चेष्टा - ____________

2. पंडित शादीराम को यह आशा न थी कि कोयलों में हीरा मिल जाएगा। घोर निराशा ने आशा के द्वार चारों ओर से बंद कर दिए। वे उन हतभाग्य मनुष्यों में से थे, जो संसार में केवल असफल रहने के लिए उत्पन्न होते हैं। सोने को हाथ लगाते थे तो वह भी मिट्टी हो जाता था। उनकी ऐसी धारणा ही नहीं, अपितु पक्का विश्वास था कि यह प्रयत्न भी कभी सफल न होगा, परंतु लाला सदानंद के आग्रह पर दिनभर बैठकर तस्वीरें छाँटते रहे। न मन में लगन

थी, न हृदय में चाव, परंतु लाला सदानंद की बात को टाल न सके। शाम को देखा दो सौ एक से एक बढ़िया चित्र हैं। उस समय वे उन्हें देखकर स्वयं उछल पड़े उनके मुख पर आनंद की आभा नृत्य करने लगी, जैसे फेल हो जाने का विश्वास करके अपने प्रारब्ध पर रो चुके विद्यार्थी को पास हो जाने का तार मिल गया हो। उस समय वह कैसा प्रसन्न होता है। चारों ओर कैसी विस्मित और प्रफुल्लित दृष्टि से देखता है। यही अवस्था पंडित शादीराम की थी। वे उन चित्रों की ओर इस प्रकार देखते थे, मानो उनमें से प्रत्येक दस-दस रुपये का नोट हो। बच्चों को उधर देखने न देते थे। वे सफलता के विचार से ऐसे प्रसन्न हो रहे थे, जैसे सफलता प्राप्त हो चुकी हो।

उपर्युक्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. पंडित शादीराम दिनभर क्या करते रहे?

....

....

ख. पंडित शादीराम को कैसी प्रसन्नता हुई?

....

ग. पंडित शादीराम को क्या विश्वास नहीं हो रहा था और क्यों?

....

....

घ. सही मिलान कीजिए–

हत	निराशा
पक्का	सदानंद
घोर	भाग्य
लाला	विश्वास

ङ. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(अ) आशा – ____________ (ब) विश्वास – ____________

(स) सफलता – ____________ (द) आनंद – ____________

3. मानव तेजी के साथ दौड़ रहा है। उसे अपने लक्ष्य का पता नहीं, उसे अपनी मंजिल का पता नहीं कि उसे जाना कहाँ है? उसकी यात्रा लक्ष्यहीन है निरुद्देश्य है। इसका मुख्य कारण है कि न तो वह किसी को अपने से योग्य बनते हुए देख सकता है और न ही किसी को अपने से आगे निकलता हुआ देखकर सहन कर सकता है। आज मनुष्य में स्वार्थ और व्यक्तिगत उन्नति की ऐसी भूख जाग उठी है कि इस भूख ने उसे इंसान से हैवान बना दिया है। आज के मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य रह गया है–जैसे-तैसे दूसरों से आगे निकलना, दूसरों को पीछे छोड़ना और यही नहीं, उन्हें हानि पहुँचाने से भी पीछे न हटना। आज का मानव दूसरों से आगे बढ़ने के लिए अपनी इंसानियत को भूल बैठा है, अपने मानवीय मूल्यों को छोड़ बैठा है

तथा अनुचित साधनों को अपना रहा है। मनुष्य सोचता है कि आज के संदर्भ में वही सबका स्वामी होगा, वही सब पर नियंत्रण करेगा जो सबसे आगे होगा। जिसके पास सबसे अधिक धन संपदा होगी, सबसे अधिक ऐश्वर्य होंगे, वह दूसरों को कुचलकर भी सबसे आगे निकल सकता है।

उपर्युक्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. आज के मनुष्य में किस प्रकार की भूख जाग उठी है?

....

....

ख. मानव दूसरों से आगे बढ़ने के लिए क्या-क्या कर रहा है?

....

ग. लक्ष्यहीन यात्रा का मुख्य कारण क्या है?

....

....

घ. मनुष्य के अनुसार सब पर किसका नियंत्रण रहेगा?

....

....

ङ. दिए गए शब्दों के वचन बदलिए-

(अ) मनुष्य – ____________ (ब) उद्देश्य – ____________

(स) साधन – ____________

4. मानव द्वारा अपने रहन-सहन की स्थिति को और अच्छा बनाने के निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप उसने अपने चारों ओर फैले प्राकृतिक साधनों का पूरा लाभ उठाने का प्रयास किया और ये प्रयास उसे वर्तमान स्थिति तक लाने में सहायक हुए हैं। आज वह अपने पूर्वजों से कहीं अधिक सुखद स्थिति में है। उसने रहने के लिए विशाल नगरों तथा सुंदर आवासों का निर्माण किया है। उसने कृषि का आधुनिकीकरण किया है तथा अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए अच्छे और विभिन्न प्रकार के बीजों का उत्पादन किया है। उसने उद्योग स्थापित किया है तथा परिवहन व संचार के अधिक तीव्रमागी साधनों का आविष्कार किया है। औषधि-विज्ञान के क्षेत्र में नए-नए आविष्कारों के कारण मानव ने अनेक घातक रोगों तथा महामारियों पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। मानव ने निस्संदेह बहुत कुछ उपलब्ध किया है, किंतु इस उपलब्धि के क्रम में जानबूझकर या कभी-कभी अनजाने में अपने पर्यावरण को बहुत अधिक क्षति पहुँचाई है। आज जल, वायु एवं ध्वनि का प्रदूषण चारों ओर फैल रहा है। जंगलों को काटने से केवल पेड़-पौधे तथा पशु-पक्षी ही प्रभावित नहीं हुए, अपितु विश्व के तापमान एवं वर्षा के स्तर में भी बदलाव आया है, जिसके कारण भूमि कटाव के स्तर में भी परिवर्तन हुआ है।

उपर्युक्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

क. प्रदूषण ने पृथ्वी के मौसम को कैसे प्रभावित किया है?

ख. आज मानव अपने पूर्वजों से अधिक सुखद स्थिति में कैसे है?

ग. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

घ. 'भूमि' और 'पक्षी' शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

भूमि - ________ ________

पक्षी - ________ ________

ङ. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के वचन बदलकर वाक्य को पुनः लिखिए।

(अ) नए आविष्कार के कारण सफलता मिली है।

....

(ब) घातक रोग पर विजय पा ली है।

....

संवाद-लेखन

पाठ योजनाः 16

आज की अवधारणा

छात्रों को संवाद-लेखन के बारे में बताते हुए उसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि कक्षा में हम अपने दोस्तों तथा घर पर अपने भाई-बहन व परिजनों से जो बातचीत करते हैं, उस वार्तालाप को ही संवाद कहा जाता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- संवाद-लेखन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- संवाद-लेखन की विषय-वस्तु किस प्रकार की हो, यह समझने में,
- संवाद-लेखन किन विषयों पर आधारित होते हैं, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को संवाद-लेखन की उपयोगिता का ज्ञान कराना।
- दैनिक जीवन में संवाद-लेखन के महत्व को बताना।
- संवाद-लेखन की क्षमता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में संवाद-लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके भीतर किसी भी विषय पर संवाद लिखने की योग्यता विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अलग-अलग अपने पसंदीदा विषयों पर संवाद-लेखन अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखकर लाने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में संवाद-लेखन संबंधी पुस्तकें।
- यूट्यूब पर संवाद-लेखन की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में संवाद-लेखन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। कुल समय : पाँच मिनट	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'संवाद-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : संवाद-लेखन किस प्रकार किया जाए इस बात की छात्रों को जानकारी देना।	• छात्रों, दो या दो से अधिक लोगों के बीच हुई बातचीत को 'संवाद' या 'वार्तालाप' कहते हैं। • सभी व्यक्तियों के बातचीत का ढंग अलग-अलग होता है। उनके विचार और भाषा भी अलग-अलग होती है। उसका ध्यान रखते हुए उन्हीं की भाषा और उन्हीं के तरीके से संवाद होने चाहिए। उनके संवाद उन्हीं के अनुसार लिखना ही संवाद-लेखन कहलाता है। • उन्हें बताएँ कि संवाद-लेखन का कार्य अधिकतर फिल्मों, नाटकों, एकांकी, रंगमंच आदि के लिए किया जाता है। कहानियों और उपन्यासों के बीच-बीच में भी छोटे-छोटे संवादों का प्रयोग किया जाता है। • बच्चों को बताएँ कि संवाद छोटे तथा उनकी भाषा सरल होनी चाहिए ताकि संवाद का अर्थ स्पष्ट हो सके। • संवाद लिखने के साथ-साथ संवाद बोलना भी एक कला है। अतः संवाद बोलते समय उसकी स्पष्टता, भाषा एवं हाव-भाव पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। • संवाद हमेशा पात्रों के अनुकूल होने चाहिए। • अध्यापक पाठ से संवाद-लेखन का कोई उदाहरण लेकर उन्हें स्पष्ट करें कि संवाद किस प्रकार लिखे जाते हैं।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्यः अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	• छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर संवाद-लेखन का अभ्यास कीजिए-

1. वोट माँगने आए नेता और गाँव के प्रधान के मध्य संवाद।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. बढ़ते हुए महिला अपराध के संदर्भ में दो महिलाओं के मध्य बातचीत।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. पर्यावरण प्रदूषण पर दो मित्रों के बीच का संवाद।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4. टी० वी० देखने के कारण अध्ययन के प्रति लापरवाह होने पर पिता और पुत्र के मध्य संवाद।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

पत्र-लेखन पाठ योजनाः 17

आज की अवधारणा

छात्रों को पत्रों के बारे में बताना। पत्रों के प्रकार–अनौपचारिक व औपचारिक पत्रों से परिचित कराना व इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

विद्यार्थी जानते हैं कि पत्र लिखने की कला अब धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है, लेकिन फिर भी पत्र-लेखन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। पत्र के द्वारा हम अपने भावों को बहुत सुंदर ढंग से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- पत्र लेखन का महत्व जानने में,
- पत्रों के प्रकार व उनकी विषयवस्तु को समझने में,
- पत्र-लेखन संबंधी आवश्यक बातों पर ध्यान देने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को पत्र-लेखन की उपयोगिता का ज्ञान कराना।
- औपचारिक व अनौपचारिक पत्रों में अंतर स्पष्ट करके समझाना।
- स्वजनों एवं मित्रों के साथ संबंध एवं अवस्था को ध्यान रखते हुए उचित संबोधन एवं अभिवादन का प्रयोग बताना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में पत्र-लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके भीतर किसी भी विषय पर पत्र-लेखन की योग्यता विकसित करना।

गतिविधियाँ

- अध्यापक के निर्देशन में छात्र पत्र के दोनों रूपों के अनुसार अपने मित्र या किसी अधिकारी को पत्र लिखें और अध्यापक को इसकी प्रतिपुष्टि करवाएँ।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध पत्र संबंधी पुस्तकें।

- यूट्यूब पर पत्र-लेखन संबंधी जानकारी प्रदान करने वाले वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में पत्र-लेखन की महत्वपूर्ण जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि पत्र विचारों के आदान-प्रदान का एक श्रेष्ठ माध्यम है। पहले जब फ़ोन, मोबाइल फ़ोन, ई-मेल आदि नहीं थे तो पत्र ही एक ऐसा साधन था जिससे दूर बैठे अपने मित्र या रिश्तेदार को अपने मन की बात बताई जा सकती थी।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को पत्र-लेखन किस प्रकार किया जाए इस बात की जानकारी देना।	• छात्रों को बताएँ कि पत्र अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। अगर पत्र को सही ढंग से लिखा जाए तो वह पाठक के हृदय पर अधिक प्रभाव छोड़ता है। • उनसे आपसी बातचीत द्वारा उन तरीकों के बारे में पूछें जिनके माध्यम से हम दूर बैठे ही अन्य व्यक्तियों के साथ संपर्क साध सकते हैं। • उन्हें पहले अनौपचारिक पत्र की परिभाषा लिखकर समझाएँ तथा बताएँ कि इन पत्रों का आधार व्यक्तिगत संबंध होता है। इन पत्रों में मन की भावनाओं को प्रमुखता दी जाती है, न कि औपचारिकताओं को। • औपचारिक पत्रों की अपेक्षा इन पत्रों में कलात्मकता अधिक रहती है क्योंकि इनमें मनुष्य के हृदय के उदगार व्यक्त होते हैं। • फिर उन्हें औपचारिक पत्र की परिभाषा से परिचित कराकर अनौपचारिक और औपचारिक में अंतर बताएँ। उन्हें बताएँ ये पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं, जिनसे हमारा निजी संबंध नहीं होता। • औपचारिक पत्र में औपचारिकताओं का विशेष ध्यान रखा जाता है। इन्हें लिखते समय सूचनाआं और तथ्यों पर भी ध्यान दिया जाता है। • उन्हें बताएँ कि इन पत्रों के अंतर्गत व्यावसायिक, कार्यालयी और सामान्य जीवन-व्यवहार के संदर्भ में लिखे जाने वाले पत्रों को शामिल किया जाता है।

	• अब पुस्तक की सहायता से औपचारिक व अनौपचारिक पत्रों के उदाहरण लेते हुए छात्रों को उन्हें लिखने के नियमों एवं प्रारूप से परिचित कराएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए।

1. गरमी के मौसम में बिजली के संकट से ग्रस्त अपने इलाके के बारे में बताते हुए बिजली अधिकारी को पत्र लिखिए।

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

    ....

2. आपका विद्यालय आपकी कक्षा के छात्रों को गरमी की छुट्टियों में जयपुर ले जा रहा है। जयपुर जाने की अनुमति माँगते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

    ....

    ....

    ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. दिल्ली नगर निगम के अधिकारी को अपने क्षेत्र में सड़कों की दुर्दशा संबंधी शिकायती-पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4. टी० वी० से दूर रहने के लिए छोटे भाई को पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

5. आपने पहली बार मंच पर कविता–पाठ किया। अपने उस अनुभव के बारे में अपने मित्र को बताते हुए पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

6. विद्यालय की ओर से कक्षा के विद्यार्थियों को ताजमहल ले जाने के लिए आग्रह करते हुए प्रधानाचार्य को प्रार्थना–पत्र लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अनुच्छेद-लेखन पाठ योजनाः 18

आज की अवधारणा

छात्रों को अनुच्छेद-लेखन के बारे में बताने हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र जानते हैं कि अनुच्छेद-लेखन में विषय से संबंधित समस्त बातों को दस-बारह पंक्तियों में ही स्पष्ट रूप से लिखना होता है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- अनुच्छेद-लेखन के बारे में सोचने और विचार करने में,
- अनुच्छेद-लेखन की विषय-वस्तु किस प्रकार की हो, यह समझने में,
- अनुच्छेद की शैली को किस प्रकार प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को अनुच्छेद-लेखन की उपयोगिता का ज्ञान कराना।
- उनके भीतर भावों एवं विचारों को साहित्यिक शैली में अभिव्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
- वाक्य-रचना की क्षमता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में अनुच्छेद-लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके भीतर किसी भी विषय पर अनुच्छेद-लेखन की योग्यता विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को अलग-अलग विषयों पर अपने विचार अनुच्छेद के रूप में अपनी कार्य-पुस्तिका में लिखकर लाने को कहे।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित अनुच्छेदों की पुस्तकें।
- यूट्यूब पर अनुच्छेद-लेखन की जानकारी प्रदान करने वाले वीडियो क्लिप्स।

- कक्षा में अनुच्छेद-लेखन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी देने वाले चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय: पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी से होगी। उनकी उत्सुकता जागृत करने के लिए उन्हें बताएँ कि आज 'अनुच्छेद-लेखन' पर चर्चा की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्‌देश्य: छात्रों को अनुच्छेद-लेखन के संबंध में बताना। उनमें अनुच्छेद-लेखन संबंधी आवश्यक बातों को जानने के लिए उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों को बताएँ कि किसी एक विषय को लेकर संक्षेप में उसके बारे में लिखना ही अनुच्छेद लेखन कहलाता है। • इसमें किसी घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किंतु सारगर्भित ढंग से लेखन-शैली में प्रस्तुत किया जाता है। • छात्रों में समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले समाचारों एवं घटनाओं पर चर्चा करें ताकि वे इसमें रुचि लेते हुए अपने विचार प्रकट कर सकें। • उन्हें इस बात को समझाएँ कि अनुच्छेद किसी लेख, निबंध या रचना का अंश भी हो सकते हैं किंतु यह स्वयं में पूर्ण होनी चाहिए। • उन्हें बताएँ कि अनुच्छेद-लेखन के दौरान भाषा सरल एवं प्रभावी होनी चाहिए। यदि अनुच्छेद के प्रारंभ में विषय से संबंधित सूक्ति, उदाहरण या कविता की कोई पंक्ति लिख दी जाए तो उसकी प्रभावशीलता और अधिक बढ़ जाती है। • छात्रों को अलग-अलग चार समूहों में विभाजित करके प्रत्येक समूह को समाचार-पत्र का एक-एक अंश देकर उसे आपस में पढ़ने को कहें। उसके बाद प्रत्येक समूह को अलग-अलग विषय से संबंधित कोई शीर्षक देकर उस पर आपसी विचार-विमर्श करते हुए अपनी कार्य-पुस्तिका में अनुच्छेद लिखने को कहें। • अनुच्छेद-लेखन के दौरान यह बात ध्यान रखें कि इसमें वाक्य छोटे-छोटे एवं क्रमवार ढंग से व्यवस्थित हों विचारों का प्रवाह स्पष्ट हो तथा आदि से अंत तक उसे पढ़ने में वह बोझिल प्रतीत न हो। • अध्यापक संकेत-बिंदु लिखवाकर उसकी सहायता से भी अनुच्छेद-लेखन करने को प्रेरित कर सकते हैं।

पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

दिए गए विषयों पर अनुच्छेद लिखिए।

1. राष्ट्रीय एकता

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2. नैतिकता का गिरता स्तर

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

3. शहरी जीवन में बढ़ता प्रदूषण

4. पुस्तकों का महत्व

5. ग्लोबल वॉर्मिंग

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

6. वन और हमारा पर्यावरण

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

# कहानी-लेखन	पाठ योजनाः 19

आज की अवधारणा

छात्रों को इस बात की जानकारी देना कि वे स्वयं किस प्रकार कहानी-लेखन कर सकते हैं तथा कहानी-लेखन के दौरान उन्हें किस बात का ध्यान रखना चाहिए।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र विभिन्न प्रकार की प्रेरक कहानियाँ पढ़ते व सुनते आ रहे हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्रों की स्वरचित कहानी के प्रति रुचि जागृत होगी तथा वे सक्षम होंगे–

- कहानी-लेखन किस प्रकार किया जाता है, इस बात को समझने में,
- कहानी-लेखन के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाए, इसे जानने में।।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों के भीतर कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता का भाव विकसित करना।
- कहानी पठन एवं लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- कहानी-लेखन की क्षमता विकसित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों के भीतर कहानी-लेखन का भाव जागृत करते हुए उनकी कल्पनाशक्ति व रचनात्मकता को पंख देना।

गतिविधियाँ

अध्यापक छात्रों को कोई चित्र दिखाएँ तथा छात्रों से अपनी-अपनी कार्य-पुस्तिका में उस पर कोई कहानी बुनने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बाल-साहित्य संबंधी पूस्तकें।
- यूट्यूब पर कहानी-लेखन संबंधी जानकारी के वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में कहानी-लेखन हेतु आवश्यक जानकारी प्रदान करने वाला चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समय : पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'कहानी-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य: छात्रों को कहानी-लेखन संबंधी आवश्यक जानकारी देते हुए इसके प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, आपने अपने बड़ों से कई कहानियाँ सुनी होंगी तथा अपने पाठ्यक्रम में भी आप कहानियाँ पढ़ते आ रहे हैं। आप स्वयं भी कहानी-लेखन कर सकते हैं। आप स्वयं भी कहानी-लेखन कर सकते हैं। • कहानी गद्य साहित्य की एक विधा है। यह विधा है। यह बीती हुई घटना पर आधारित होती है तथा कई बार इसमें कल्पनात्मकता का सहारा लिया जाता है। • छात्रों, कहानी की भाषा सहज एवं सरल होनी चाहिए। • कहानी-लेखन के दौरान उसकी रोचकता पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। • उन्हें बताएँ कि कहानी इस प्रकार लिखी जाए कि वह एक क्रम से आगे बढ़ती हुई प्रतीत हो। उसकी गति कहीं भी अवरुद्ध न हो। इस प्रकार उसमें प्रभारोत्पादकता एवं स्वाभाविकता का गुण स्वत: ही उत्पन्न हो जाता है। • छात्रों को कई समूहों में विभाजित करते हुए प्रत्येक समूह को कहानी का एक-एक शीर्षक दें। अब छात्रों को कहें कि एक-दूसरे की सहायता से अपनी-अपनी कल्पना करते हुए कहानी आगे बढ़ाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय : पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो कुछ सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

क. बॉक्स में दिए गए शब्दों के आधार पर कहानी पूरी कीजिए तथा उसका शीर्षक भी बताइए।

पढ़ती	स्वभाव	लड़कियाँ	दोस्ती	चंचल	छज्जे
मजाक	सगाई	आदत	अहसास	व्यर्थ	शर्म
तारीख	सहेलियाँ	गंभीर	गधा	दूल्हे	

किसी गाँव में दो .... रहती थीं। एक का नाम मधु तथा दूसरी का नाम नीरू था। दोनों की आपस में गहरी .... थी। दोनों के घर एक-दूसरे के नजदीक थे। दोनों .... एक ही स्कूल में .... थीं। पर इनका .... अलग-अलग था। मधु काफ़ी .... और चुलबुली लड़की थी। किंतु नीरू शांत व .... स्वभाव की थी। गाँव में कोई भी शादी होती तो दोनों सहेलियाँ .... पर जाकर खड़ी हो जाती तथा वहीं से बारात को देखा करती थीं। मधु आमतौर पर .... का .... उड़ाते हुए कह देती, देखो घोड़े पर कौन?

फिर खुद ही कह देती .... बैठकर आ रहा है। आस-पास में जो भी सुनता वह हँस देता। यह सिलसिला काफ़ी समय तक चलता रहा। कुछ समय बाद मधु की .... हो गई। शादी की .... भी पक्की हो गई। नियत तारीख को बारात बाजे-गाजे के साथ मधु के दरवाज़े पर आ गई। सब बारात देखने दौड़ पड़े। मधु भी उनके साथ दौड़ पड़ी और छज्जे पर जाकर खड़ी हो गई। दूल्हे को देखते ही नीरू बोल पड़ी कि मधु घोड़े पर कौन, ... के मुताबिक मधु ने कह दिया 'गधा'। वहाँ खड़े सभी लोगों की ज़ोर से हँसी छूट पड़ी। जब मधु को अपनी गलती का .... हुआ तो उसने अपना सर नीचे करके आँखें झुका लीं, किंतु .... के मारे किसी से कुछ न कह पाई। मधु की मज़ाक करने की आदत उसके ऊपर ही भारी पड़ गई। इसलिए किसी का भी .... मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

ख. दिए गए विषयों पर कहानी लिखिए–

1. आलसी ब्राह्मर्ण

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. एकता की ताकत

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. ताकत का घमंड

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4. ईमानदार किसान

निबंध-लेखन

पाठ योजनाः 20

आज की अवधारणा

छात्रों को निबंध-लेखन के बारे में बताते हुए इसके उदाहरणों से परिचित कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्रों को ज्ञात है कि कई अनुच्छेदों को मिलाकर निबंध की रचना की जाती है।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- 'निबंध' का अर्थ जानने में,
- निबंध की विषय-वस्तु किस प्रकार की हो, यह समझने में,
- निबंध की शैली किस प्रकार प्रभावपूर्ण बनाई जा सकती है, इसे समझने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- छात्रों को निबंध-लेखन की उपयोगिता का ज्ञान कराना।
- उनके भीतर भावों एवं विचारों को साहित्यिक शैली में अभिव्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
- वाक्य-रचना की क्षमता का विकास करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में निबंध-लेखन के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके उनके भीतर किसी भी विषय पर निबंध लिखने की योग्यता विकसित करना।

गतिविधियाँ

अध्यापक विभिन्न विषयों के शीर्षकों की परचियाँ बनाकर एक जार में डालें तथा एक-एक करके छात्रों को परची निकालने को कहें। अब उनसे उन शीर्षकों पर अपनी-अपनी कार्य-पुस्तिका में अपने विचार निबंध के रूप में लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित निबंधात्मक पुस्तकें।
- यूट्यूब पर निबंध-लेखन की जानकारी प्रदान करने वाले वीडियो क्लिप्स।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। **कुल समयः पाँच मिनट**	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'निबंध-लेखन' से की जाएगी। उन्हें आज की अवधारणा से अवगत कराएँ।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : निबंध-लेखन किस प्रकार किया जाए इस बात की जानकारी छात्रों को देना।	• छात्रों, 'निबंध' शब्द का अर्थ है–भली-भाँति बँधा हुआ। अतः अपने मानसिक भावों या विचारों को क्रमानुसार नियंत्रित ढंग से लिखना ही 'निबंध-लेखन' है। • निबंध-लेखन एक कला है। इसके लिए विषय की पूरी जानकारी और भाषा पर अधिकार आवश्यक है। • उन्हें बताएँ कि निबंध को सरल एवं रोचक बनाए रखने हेतु उसमें अर्थपूर्ण वाक्यों का प्रयोग किया जाता है तथा विषयानुसार इसे छोटा या बड़ा लिखा जा सकता है। • निबंध की विषय-विस्तु को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। सरलता एवं रोचकता हेतु छोटे-छोटे अर्थपूर्ण वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। • छात्रों को बताएँ कि विषय-वस्तु की मुख्य बातों को अलग-अलग अनुच्छेदों के माध्यम से व्यक्त करना चाहिए। • आवश्यकतानुसार मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से निबंध की शैली प्रभावपूर्ण बनती है। • अध्यापक पाठ से निबंध-लेखन का कोई उदाहरण लेते हुए यह स्पष्ट करें कि निबंध किस प्रकार लिखा जाता है।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समयः पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए–

1. ग्लोबल वॉर्मिंग के खतरे

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. मेरे जीवन का लक्ष्य

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. जन धन योजना

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

अन्य जानकारी पाठ योजनाः 21

आज की अवधारणा

छात्रों को हिंदी कैलेंडर, जड़ पदार्थों की ध्वनियाँ, विभिन्न शब्दों के हिंदी नामों तथा समूहवाची शब्दों से अवगत कराना।

पूर्ववर्ती ज्ञान

छात्र पिछली कक्षाओं में अंग्रेज़ी महीनों के नाम जान गए हैं। वे अंग्रेज़ी भाषा में दिनों एवं महीनों के नामों को बोलना व लिखना जानते हैं। भाषा प्रयोग के दौरान वे कई बार कुछ समूहवाची शब्दों का भी प्रयोग करते हैं।

सीखने का प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद छात्र निम्न में सक्षम हो सकेंगे–

- हिंदी महीनों के नामों को जानने में,
- जड़ पदार्थों से किस प्रकार की ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं, इसे समझने में,
- समूहवाची शब्दों के लिए किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है, इसे जानने में।

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के पठन-पाठन का उद्देश्य है–

- हिंदी कैलेंडर के महीनों के नामों स परिचित कराना।
- जड़ पदार्थों की ध्वनियों का ज्ञान कराना।
- दैनिक जीवन में भाषा प्रयोग के दौरान जड़ पदार्थ की ध्वनियों तथा समूहवाची शब्दों का प्रयोग करने हेतु छात्रों को प्रेरित करना।

लक्ष्य कौशल

छात्रों में विविध जानकारियों को जानने के प्रति कौतूहल उत्पन्न करके तरह-तरह की ध्वनियों को पहचानने के लिए प्रेरित करना एवं इस दिशा में उनकी कल्पना को पंख देना।

गतिविधियाँ

छात्रों को अलग-अलग आवाज़ों व पशु-पक्षियों की बोलियों को सुनकर कैसा आभास होता है। उन्हें कौन-सी ध्वनियाँ सुनाई देती हैं। अपनी कार्य-पुस्तिका में उस वस्तु व पशु-पक्षी का चित्र लगाकर उसके नीचे उसकी ध्वनि या बोली को लिखने को कहें।

पाठ-विस्तार

शिक्षण सामग्री

- विद्यालय के पुस्तकालय में अलग-अलग जानकारियाँ देने वाली पुस्तकें।
- यूट्यूब पर समूहवाची शब्दों को जानने संबंधी वीडियो क्लिप्स।
- कक्षा में हिंदी महीनों के नाम लिखे हुए चार्ट पेपर।

शिक्षण-अधिगम अवलोकन

पाठ से जोड़ना	
इस पाठ के उद्देश्य/आज की अवधारणा से छात्रों को परिचित कराना। कुल समय : पाँच मिनट	कक्षा में मुसकराते हुए प्रवेश करें और छात्रों के अभिवादन के बाद उन्हें बताएँ कि आज के दिन की शुरुआत उनकी मुसकराहट के साथ-साथ एक नए अध्याय 'अन्य जानकारी' से होगी जिसमें उन्हें विविध जानकारियाँ दी जाएँगी; जैसे—हिंदी महीनों के नाम, जड़ पदार्थों की ध्वनियाँ, अंग्रेज़ी शब्दों के हिंदी नाम तथा समूहवाची शब्दों की जानकारी।
पाठ-प्रवर्तन	
उद्देश्य : छात्रों को पाठ की अन्य जानकारियों के बारे में बताना तथा उनमें इन्हें जानने के प्रति उत्सुकता जागृत करना।	• छात्रों, हिंदी कैलेंडर के अनुसार साल का आरंभ अप्रैल के महीने से माना जाता है। इसे 'चैत्र मास' कहते हैं। • उन्हें चार्ट पेपर के माध्यम से कैलेंडर के नामों के हिंदी नाम बताएँ। • यह भी बताएँ कि कुछ जड़ पदार्थ ऐसे होते हैं जिनकी ध्वनियाँ निर्धारित की गई हैं। पाठ से ऐसे शब्दों तथा उनकी ध्वनियों के बारे में बताएँ। • तत्पश्चात्, छात्रों को विभिन्न शब्दों के हिंदी नामों से परिचित कराएँ। पाठ से ऐसे शब्दों का सस्वर वाचन करवाएँ। • अब छात्रों को समूहवाची शब्दों को परिभाषित करते हुए बताएँ कि किसी समूह के लिए प्रयुक्त शब्द 'समूहवाची शब्द' कहलाते हैं। • पाठ से ऐसे शब्दों का वाचन छात्रों से ही करवाएँ।
पाठ की समाप्ति	
उद्देश्य : अधिगम मूल्यांकन **समय: पाँच मिनट**	छात्रों को मुसकराते हुए धन्यवाद कहें। आज के पाठ से उन्होंने जो सीखा है, उसकी संक्षिप्त में चर्चा करें।

कार्यपत्रिका

1. निम्नलिखित जड़ पदार्थों को उनकी ध्वनियों से सुमेलित कीजिए -

पदार्थ	**ध्वनियाँ**
पानी	धाँय-धाँय
हवा	टिक-टिक
जूता	कड़कना
चारपाई	टपकना
ढोल	साँय-साँय
बिजली	चर-चर
बंदूक	ढम-ढम
घड़ी	चरमराना

2. निम्नलिखित शब्दों के लिए प्रयोग किए जाने वाले समूह का नाम बताइए -

1. वस्तुओं का – ____________
2. लताओं का – ____________
3. पशु-पक्षियों का – ____________
4. भक्तों की – ____________
5. सैनिकों की – ____________
6. राज्यों का – ____________
7. अंगूरों का – ____________

3. दिए गए शब्दों के लिए हिंदी नाम बताइए -

1. पॉलयूशन - ____________
2. टेलीफ़ोन - ____________
3. एडिटर - ____________
4. प्रोफ़ेसर - ____________
5. टूरिस्ट - ____________
6. ड्राइवर - ____________
7. साइंटिस्ट - ____________
8. इंजीनियर - ____________